उमेश कुमार जैन

जैन संस्कार विधि

(नवीन संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण)

प्रकाशक :

वीर पुस्तक भण्डार

मनिहारों का रास्ता,

जयपुर-3

भादवा सं. २०६०

मूल्य १०.००

Scanned by CamScanner

जैन संस्कार विधि

[नवीन संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण]

- संग्रहकर्त्ता -
पं. निर्मलकुमार बोहरा
एम. ए. , जैनदर्शनाचार्य
जयपुर (राजस्थान)

प्रकाशक
वीर पुस्तक भण्डार
मनिहारों का रास्ता,
जयपुर - ३०२ ००३

Scanned by CamScanner

विनायक यन्त्र

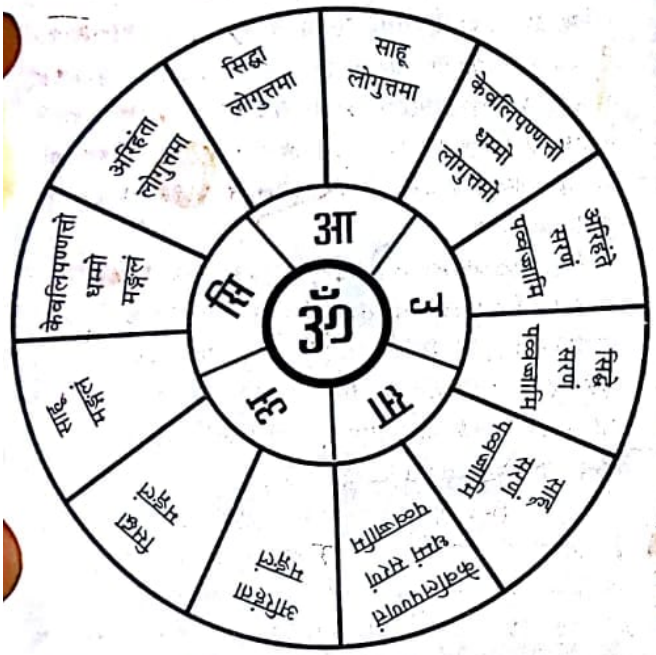

प्रकाशकीय

स्वर्गीय श्रद्धेय गुरुवर्य पं. चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ ने बीसवीं शती के द्वितीय शतक में मारवाड़ राजस्थान में विवाह संस्कार जैन मान्यतानुसार हो — इसका प्रचलन किया था । तब तक जैन विधि से विवाह संस्कार नहीं होता था । विवाहादि संस्कार कराना जिनके लिए जीविका का साधन था उनसे तो विरोध मोल लेना ही पड़ा, साथ में कई जैन बन्धु भी इसमें सहयोगी नहीं हुए । लेकिन पंडितजी ने गांव-गांव में इसका प्रचार किया । जब सन् १९३१ में आप दिगम्बर जैन पाठशाला (वर्तमान दि. जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय) के प्रधान पद पर आये तब आपने जयपुर में भी जैन विवाह पद्धति का प्रचार किया । उसकी पुस्तक छपाई ।

मेरे पिताजी स्व. श्री भँवरलाल जी न्यायतीर्थ और उनके साथी जो उपाध्याय में पढ़ते थे — स्व. पं. श्री प्रकाशजी शास्त्री, स्व. पं. आनन्दोपाध्याय, स्व. पं. मिलापचन्दजी शास्त्री आदि - को जैन विवाह पद्धति से विवाह क्रिया में शिक्षित किया और उनके बाद जो भी बैच आये सबको इस कार्य में लगाया । राजस्थान में जैन विवाह पद्धति से विवाह कराने के प्रथप प्रचारक गुरुदेव थे ।

पूज्य पण्डितजी साहब की प्रथम प्रकाशित पुस्तकों में संशोधन परिवर्द्धन करके "जैन संस्कार विधि" नामक पुस्तक प्रकाशित की गयी जिसमें अन्यान्य विधियाँ भी दी गई थीं, वह समाप्त हो जाने पर नवीन संशोधित संस्करण छपाया - वह भी समाप्त हो गया । नवीन संशोधित व परिवर्द्धित संस्करण पं. श्री निर्मल कुमार जी बोहरा द्वारा किया गया

Scanned by CamScanner

है जो आपके हाथों में है । इसमें अन्य संस्कारों की विधियाँ भी हैं और अपेक्षित पूजायें भी सम्मिलित कर दी गई हैं । इसमें अन्य विद्वानों की संस्कार विधि सम्बन्धी पुस्तकों से भी आवश्यक अंश लिये गये हैं - उन विद्वानों के हम आभारी हैं ।

इस पुस्तक को यह रूप देने, आवश्यक परिवर्द्धन करने, क्रम निश्चित करने, आदि सम्पादन कार्य में विधान विशेषज्ञ श्री पं. निर्मल कुमार जी बोहरा जैन दर्शनाचार्य, प्राध्यापक, दि. जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय जयपुर ने काफी सहयोग दिया है । हम उनके अत्यन्त आभारी हैं । आज जयपुर और बाहर से विधि विधानों के लिए उनकी काफी माँग है । वे तथा उक्त संस्कृत महाविद्यालय के अन्य विद्वान् जहाँ भी जाते हैं वहाँ जो आर्थिक सहायता प्राप्त होती है, विद्यालय में ही जमा कराते हैं, स्वयं नहीं लेते । वे सब धन्यवाद के पात्र हैं ।

आशा है यह पुस्तक विधि विधान के लिए उपयोगी प्रतीत होगी । इसमें भी जो कमी रह गई हो उसके लिए विद्वद्गण कृपया हमें सूचित करेंगे ताकि अगले संस्करण में और सुधार हो सके ।

निर्मल कुमार बड़जात्या
(पुत्र समाजरत्न स्व. पं. श्री भँवरलालजी न्यायतीर्थ)
संचालक - वीर पुस्तक भण्डार, जयपुर

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं.
विवाह सम्बन्धी सगाई आदि क्रियायें	
१. वाग्दान (सगाई)	६
२. लग्न भेजना	६
३. लग्न पत्रिका	७
४. लग्न देना	८
५. विनायक यन्त्र स्थापना	८
६. स्थम्भ रोपण	९
७. घुडचढ़ी	९
८. गौरवा	१०
जैन संस्कार विधि	
९. मंगलाचरण	११
१०. मंगलाष्टक	११
११. विवाह संस्कार (तिलक मंत्र)	१३
१२. विनायक (कंकण विधि आदि)	१३
१३. पूजन प्रारम्भ स्वस्ति मंगल	१४
१४. देवशास्त्र गुरु विद्यमान तीर्थंकर सिद्ध परमेष्ठी समुच्चय पूजा	१८
१५. नवदेव पूजा	२०
१६. विनायक यन्त्र	२२
१७. शाखाचार	२८
१८. कन्या प्रदान व वरण	३०
१९. सिद्ध पूजा श्रुत पूजा गुरु पूजा	३१
२०. हवन	३३
२१. सप्तपदी पूजा	३९
२२. गठजोडा, हथलेवा एवं फेरे	४१
२३. पुण्याह वाचन शांति धारा	४७
२४. तिलक मंत्र, हथलेवा छुड़ाना, शान्ति स्तव आदि	४८
अन्य आवश्यक विधियाँ	
२५. मोद क्रिया संस्कार (आठवाँ)	५१
२६. नाम कर्म (ह्वावण) संस्कार	५१
२७. प्रथम जिन दर्शन	५२
२८. शिलान्यास	५३
२९. नवगृह प्रवेश	६७
३०. दुकान या कारखाने का मुहूर्त व दीपावली पूजन	६८
३१. सरस्वती पूजन	६९
३२. वर्द्धमान जिन पूजन	७१
३३. बहियों का मुहूर्त	७६
३४. जिनवाणी आरती	७७
३५. संस्कारों हेतु पूजन सामग्री	७८

Scanned by CamScanner

विवाह सम्बन्धी सगाई आदि क्रियायें

वाग्दान (सगाई)

कन्या के पिता का अपने समान धर्मानुयायी सुलक्षणों युक्त योग्य वर को देखकर अपनी जातीय प्रथा के अनुसार गोत्रादिक का विचार रखते हुए वर कन्या दोनों की जन्म पत्रिका के ग्रह योगों को मिलाकर या बोलते नाम से मिलाकर अपने कुटुम्बी इष्टजन व पंचों के समक्ष मनोत्साह पूर्वक अभीष्ट वर को कन्या देने का वचन देना वाग्दान या सगाई कहलाता है । इस कार्य को देश काल देखते हुए विशाल रूप न देकर आजकल कन्या पक्ष के पत्र द्वारा "वाग्दान" प्रार्थना के उत्तर में वर पक्ष की ओर से पत्र द्वारा सगाई सम्बन्ध को स्वीकृति मिल जाने पर ही इस पद्धति को पूर्ण हुआ समझ लिया जाता है अथवा वर को कन्या पक्ष वाले अपने घर बुलाकर माला पहनाकर पान और २) ५० पैसे भेंट कर सगाई की रस्म पूरी करते हैं - यह राजस्थान की प्राचीन परम्परा है । आजकल नाश्ता, पार्टी, भोज, टीका आदि से यह सगाई की रस्म बहुत खर्चीली हो गई है, जिससे सर्व समाज का निर्वाह होना मुश्किल हो गया । अगर सगाई टीके से आवे तो उस समय नवदेव पूजन (जो इस पुस्तक में पृष्ठ २० पर है) करा कर यह रस्म कर लेनी चाहिए ।

लग्न भेजना

वाग्दान सगाई के पीछे पाणिग्रहण के मुहूर्त से कुछ ही दिन (२१, १७, १५ या ११ दिन) पहले शुभ मुहूर्त में कन्या के पिता का नवदेव पूजन करा कर इष्ट बन्धु वर्गों व पंचों की उपस्थिति में पाणिग्रहण कराने के दिन लग्नादि (विवाह के समस्त कार्य विभाग) का निर्णय करके पत्र में लिखवाकर किसी योग्य सेवक व विश्वासी व्यक्ति द्वारा वर के पिता के यहाँ भेज देना लग्न कहलाता है जिसके लिखने की प्रणाली प्राय: यह होती है ।

लग्न पत्रिका

* श्री वीतरागाय नम: *

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र - महिता सिद्धाश्च सिद्धीश्वरा: ।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा: पूज्या उपाध्यायका: ॥
श्री सिद्धांत - सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका: ।
पंचैते परमेष्ठिन: प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥ १ ॥
जननी जन्म सौख्यानां वर्द्धनी कुल - सम्पदाम् ।
पदवी पूर्व पुण्यानां लिख्यते लग्न पत्रिका ॥ २ ॥

सिद्ध श्री शुभस्थाने _____ नगरे सर्वोपमा विराजमान साहजी श्री _____ श्री _____ श्री _____ तथा श्री _____ योग्य लिखी ___ से _____ का सादर जय जिनेन्द्र वंचना जी ! अपरंच हमारे यहाँ _____ की सुपुत्री सौ. कां. ____ का पाणिग्रहण - संस्कार आपके यहाँ श्री _____ के सुपुत्र चि. _____ के साथ शुभ मिती ____ सम्वत् _____ वी. नि. सं. ____ तदनुसार ___ वार ____ दिनाङ्क _____ सन् ____ ई. को होना निश्चित हुआ है । जिसके पाणिग्रहण (फेरों) का समय ___ बजे है । तोरण निकासी का समय ___ है । अत: आप सभी महानुभावों से सविनय निवेदन है कि आप बरात लेकर समय से पूर्व पधारें । आपके पधारने से ही सारी शोभा है ।

इति शुभम्

Scanned by CamScanner

लग्न लेना

वर का पिता लग्न के आने पर अपने कुटुम्बीजनों, इष्ट मित्रों व पंचों को सम्मान सहित बुलावे और उनके समक्ष नवदेव पूजन करावे । पश्चात् लग्न पत्र और चिट्ठी को पढ़वा कर सबको सुना दे तथा बुलाए हुए सज्जनों का प्रचलित प्रथा के अनुसार सत्कार करे और लग्न पत्रिका लाने वाले व्यक्ति को स्वीकृति का उचित पत्रोत्तर लिख दे तथा उसे यथा योग्य सत्कार पूर्वक विदा करदे ।

विनायक यन्त्र स्थापना

यह लोक प्रसिद्धि में, "विंदायक स्थापन" कहा जाता है । यह लग्न के दिन से लेकर विवाह के तीन दिन बाकी रहने तथा किसी भी दिन शुभ मुहूर्त में श्री मन्दिरजी से लाकर स्थापना किया जाना चाहिए। पहले कन्या को स्नान करा, वस्त्राभूषणों से अलंकृत कर, सौभाग्यवती कुल वधुओं सहित प्रभावना के हेतु मङ्गलगान पूर्वक गाजे बाजे के साथ श्री जिन मन्दिरजी ले जावें और वहाँ पर भगवान का दर्शन स्तवन कर नित्य नियम पूजन पूर्वक विनायक यन्त्र का साभिषेक पूजन करें या करावें, पीछे पूर्ववत् यथा योग्य उत्सव व मङ्गल गान करते हुए श्री मन्दिरजी से विनायक यन्त्र लाकर अपने घर के पवित्र एकान्त व उच्च स्थान में स्थापना करदें और उसी दिन से विघ्नों के शमन करने के लिए नित्य प्रति नित्य नियम पूजन सहित विनायक यन्त्र का अभिषेक व पूजन किया करें तथा उस रोज भजन गान पूर्वक रात्रि जागरण भी करें । विनायक यन्त्र की विधि जिस प्रकार कन्या के लिए बतलाई गई है उसी प्रकार वर के भी घर में करना चाहिये ।

यदि स्थान के उचित प्रबन्ध न होने या किसी और विशेष कारण से अपने घर में विनायक यन्त्र को स्थापन कर पूजनादि करना सम्भव न हो सकता हो तो श्री जिन मन्दिरजी में ही विवाह पर्यन्त अनादि निधन

विनायक यन्त्र का अभिषेक पूजन करने की प्रतिज्ञा कन्या/वर या उसके पिता आदि को कर लेनी चाहिये । कङ्कण विधि (विवाह विधि) जो इस पुस्तक में पृष्ठ १३ पर दी गई है तदनुसार कङ्कण बांधे ।

स्तम्भ (थांम) रोपण

गृहस्थाचार्य वेदी का कटनी के पीछे ठीक मध्य भाग में या वेदी मण्डप के दक्षिण पश्चिमी कोने में एक खड्डा खुदवाकर उसके पास ही पूर्व की ओर मुख करके एक पट्टे पर कन्या को बिठादे, और वहाँ पर अक्षतों से एक साथिया बना कर उस पर एक छोटा सा मङ्गल कलश जिसमें मूंग, हल्दी, सुपारी, दूब, सफेद सरसों, अक्षत, १ चवन्नी तथा चांदी पड़ी हुई हो, साथिया ऊपर बना हुआ हो उसके मुख पर श्रीफल रखकर लाल कपड़ा और ऊपर से मोली लपेट माला पहिना कर स्थापना करके और खड्डे में भी अक्षतादि मङ्गलीक द्रव्य डलवादे । पश्चात् कन्या से नव देव पूजन कराकर उसके तिलक मन्त्र से तिलक तथा रक्षा बन्धन मन्त्र से मोली बंधन और आशीर्वादात्मक श्लोक से पुष्पक्षेपण करदें । पीछे एक छबड़ी में यह ही मङ्गल कलश रख कर वेदी से एक ऊँचे स्तम्भ पर साथिया बनावें और उसके अग्रभाग में पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आड़ी तिरछी दो लकड़ी जड़कर उसकी चारों दिशाओं में चार खूंटी लगवादे, जिससे वो छबड़ी बीच में ठीक आ जावे । उसमें आम्रपत्र व ध्वजादि सहित "मङ्गल कलश स्थापन मन्त्र" (जो पृष्ठ १४ पर दिया हुआ है) पढ़, कलश को स्थापित कर मजबूत रस्सी से बंधवाकर उस खड्डे में इस स्तम्भ को आरोपित करदें ।

घुड़चढ़ी

बरात चढ़ने से कुछ समय पहले वर को स्नान कराकर वस्त्राभूषणों से अलंकृत करदे पश्चात् गृहस्थाचार्य निम्न मन्त्र पढ़कर मुकुट (मोड) बन्धन करवादे ।

Scanned by CamScanner

इन्द्रादीनां शोभतें मस्तके यः प्राज्ये राज्ये चक्रवर्त्यादिकानां ।
शोभा कुर्यान्मंगलं कार्यसिद्धौ तं शीर्षऽस्मिन् धारयेद्वै किरीटं ।

पश्चात् नवदेव पूजन करा कर तिलक, रक्षा बन्धन कर, आशीर्वाद के श्लोक से पुष्प क्षेपण करदे । पीछे लौकिक शिष्टाचार को पूरा कर गाजे बाजे के साथ सौभाग्यवती स्त्रियों के मङ्गलगान पूर्वक श्वसुर - गृह - यात्रा की निर्विघ्न पूर्णता और मंगल कामना के हेतु घोड़े पर सवार हो श्री जिनालय में जाकर भगवान् का दर्शन स्तवन वन्दना करे और यथाशक्ति श्रीफल व कुछ द्रव्य भेंट देकर अपने कुटुम्बी भाई बन्धुओं और बारातियों के साथ उत्सव के साथ श्वसुर के घर पर जाने के लिये प्रस्थान करे ।

गोरव

जब बरात नगर में आ पहुंचे तब कन्या का पिता उनके ठहरने आदि का उचित प्रबन्ध करादे और अपने कुटुम्बी भाई बन्धुओं तथा इष्ट मित्रों व पंचों सहित उनके स्वागत के लिये यथाशक्ति वस्त्र, आभूषण व द्रव्य तथा मांगलिक जल पूर्ण कलश आदि लेकर उनके स्थान पर जावे । तब गृहस्थाचार्य नवदेव पूजन कराकर अपने - अपने मन्त्रों से तिलक, रक्षा बन्धन, पुष्प वृष्टि करके कन्या के पिता के यहाँ के नूतन वस्त्राभरणादि पहनावे या देते समय नीचे लिखा श्लोक पढ़े ।

भूयात्सुपद्मनिधि सम्भवसार वस्त्रं ।
भूयाच्च कल्प कुज कल्पित दिव्य वस्त्रम् ॥
भूयात्सुरेश्वर समर्पित सार वस्त्रम् ।
भूयान् मयार्पितमिदं च सुखाय वस्त्रम् ॥ १ ॥

ॐ अ सि आ उ सा तुष्टि पुष्टि सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को पढ़कर वर के मस्तक पर पुष्पक्षेपण करदें तथा कन्या का पिता वर के पिता को भेंट देकर मिले ।

ॐ

जैन संस्कार विधि

मंगलाचरण

श्री वर्द्धमानमर्हन्तमनन्त-शक्तिम्,
आनन्दकन्दमभिनम्य जगत्-प्रकाशम् ।
धर्म-प्रकाशनकृते क्रियतेऽत्र सार्वः,
संस्कार-पावन-विधिर्विधिवज्जिनोक्तः ।१।
संस्कारतो भवति मानवता विशुद्धा,
संस्कारतो भवति सर्वमनिंद्यमिद्धम् ।
संस्कारतो भवति कर्मविनाशनेच्छा,
संस्कार-हीन मनुजा न भवन्ति शुद्धाः ।२।
कल्याणं दिशतु प्रभूत-विभवो भगवान् भवोद्धारकः ।
मोहाराति- विनाशन- प्रकटित- क्रांतिः सुरेन्द्रार्चितः ॥
अस्मिन् कर्मणि मंगले गतमलः श्रीमान् स्वयंभूर्जिनः ।
येन स्यात् सकलं फलान्वितमिदं कार्यं शुभं पावनम् ।३।

अथ मंगलाष्टकम्

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः ।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्रीसिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः ।
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ।१।
श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योतरत्न - प्रभा-

Scanned by CamScanner

भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः ।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्च गुरवः, कुर्वन्तु वो मङ्गलम् । २ ।
नाभेयादिजिनाः प्रशस्तवदनाः, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णुप्रतिविष्णुलाङ्गलधराः, सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्ठिपुरुषाः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् । ३ ।
ये पञ्चौषधिऋद्धयः श्रुततपो - वृद्धिंगताः पञ्च ये ।
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्त - कुशलाश्चाष्टौविधाश्चारिणः ।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः ।
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः, कुर्वन्तु वो मङ्गलम् । ४ ।
ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे, मेरौ कुलाद्रौस्थिताः ।
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा, वक्षाररौप्याद्रिषु ॥
इक्ष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे ।
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु वो मङ्गलम् । ५ ।
कैलाशो वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरी ।
चम्पा वा वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेदशैलोऽर्हतः ॥
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरी, नेमीश्वरस्यार्हताम् ।
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु वो मङ्गलम् । ६ ।
सर्पो हारलता भवत्यसिलता, सत्पुष्पदामायते ।
सम्पद्येत रसायनं विषमपि, प्रीतिं विधत्ते रिपुः ॥
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः, किं वा बहु ब्रूमहे ।
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति तरां, कुर्वन्तु वो मङ्गलम् । ७ ।
यो गर्भावतरोत्सवेप्यर्हतां जन्माभिषेकोत्सवे ।

यो जातः परिनिष्क्रमस्य विभवे यः केवलज्ञानभाक् ॥
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः ।
कल्याणानि च तानि पंचसततं कुर्वन्तु वो मंगलम् । ८ ।
जायन्ते जिनचक्रवर्त्तिबलभृद्भोगीन्द्रकृष्णादयो ।
धर्मादेव दिगंगनांगबिलसच्छश्वद्यशश्चन्द्रिकाः ॥
तद्धीनाः नरकादियोनिषु नराः दुःखं सहन्ते ध्रुवम् ।
सस्वर्गात्सुखरामणीयकपदं कुर्वन्तु वो मङ्गलम् । ९ ।
इत्थं श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्करम् ।
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणां मुखाः ।
ये शृण्वन्ति पठन्ति ते च सुजना धर्मार्थकामान्विताः ।
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि । १० ।

॥ इति मगलाष्टकम् ॥

विवाह - संस्कार

तिलक - मन्त्र

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ॥

विनायक - विधि

विवाह के दिन अथवा पहले शुभ मुहूर्त में वर अथवा कन्या को स्नान कराकर गाजे बाजे के साथ जिन मन्दिर ले जावे, वहाँ विनायक यन्त्र के सम्मुख खड़े होकर विनायक यन्त्र की पूजा कर तिलक लगावे और निम्नलिखित कंकण मन्त्र बोलते हुए -

जिनेन्द्र-गुरू-पूजनं श्रुतवचः मुदा धारणं,
स्वशील यम-रक्षणं ददन-सत्तपो वृहंणम् ।
इति प्रथित-षट्क्रिया निरतिचार मास्तां तवे-
त्यथ प्रथित-कर्मणि विहित-रक्षिका बन्धनम् ॥

Scanned by CamScanner

वर के दाहिने हाथ एवं कन्या के बायें हाथ पर कंकण बांधे । तत्पश्चात् अर्घ्य के साथ एक रूपया नारियल चढ़ा कर पूर्ववत् घर लौटा लावे ।

मङ्गल कलश स्थापन

गृहस्थाचार्य व अन्य गुरुजन नवरत्न, गंध पुष्प अक्षत इत्यादि मांगलिक वस्तुओं से युक्त करके जल से भरे हुए कलश को नारियल सहित लाल व पीले वस्त्र से ढककर निम्न गद्य के उच्चारण पूर्वक मध्य कटनी पर स्थापन करे -

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मते मासानां मासोत्तमे ..... मासे ..... पक्षे.....तिथौ ..... वासरे सर्वदूषण रहितेऽस्मिन् विधीयमान विवाह (विधान) कर्मणि .....गोत्रोऽहं..... पौत्रः ..... पुत्रः - नामाऽहं हवन मण्डप भूमि शुद्ध्यर्थं, क्रियाशुद्ध्यर्थं, पुण्याहवाचनार्थ, नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतादि - बीजपूर - शोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थ- जलपूरितं मङ्गलकलशस्थापनं करोमि झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

यन्त्र का अभिषेक

ॐ भूर्भुवः स्वरिह एतद् विघ्नौघवारकं यन्त्रमहं परिसिंचयामि ।

मुकुट बन्धन मन्त्र

इन्द्रादीनां शोभते मस्तकेभ्यः प्राज्ये राज्ये चक्रवर्त्यादिकानां ।
शोभा कुर्यान्मंगलं कार्यसिद्धौ, तं शीर्षेऽस्मिन् धारयेद्वै किरीटं ॥

अथ पूजन प्रारम्भ

ॐ जय, जय, जय । नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु । णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व - साहूणं ॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः । इति पुष्पांजलिंक्षिपेत् ।

चत्तारि मङ्गलं, अरिहंता मङ्गलं, सिद्धा मङ्गलं, साहू मङ्गलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मङ्गलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारिसरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा ।

(थाली में पुष्पांजलि क्षेपण करना ।)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत् पञ्च नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥ २ ॥
अपराजित-मन्त्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशनः ।
मङ्गलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मङ्गलं मतः ॥ ३ ॥
एसो पञ्च णमोयारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मङ्गलम् ॥ ४ ॥
अर्हं - मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्ध-चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम् ॥ ५ ॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥ ६ ॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥ ७ ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (थाली में पुष्पाञ्जलि क्षेपना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकै-श्चरुसुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः ।
धवलमङ्गलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे ॥

Scanned by CamScanner

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामधेयेभ्य: अर्घ्यम् ।

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद - नायकमनंत - चतुष्टयार्हम् । श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतैकहेतुर्जैनेन्द्र - यज्ञ - विधि - रेष मयाऽभ्यधायि ॥ ९॥ स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति- स्वभाव - महिमोदय सुस्थिताय । स्वस्तिप्रकाश - सहजो- र्जितदृङ्मयाय, स्वस्ति प्रसन्न - ललिताद्भुत - वैभवाय ॥ १० ॥ स्वस्त्युच्छलद्विमल - बोध - सुधाप्लवाय, स्वस्ति स्वभाव - परभाव- विभासकाय । स्वस्ति त्रिलोक - विततैकचिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल- सकलायत - विस्तृताय ॥ ११ ॥ द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः । आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्, भूतार्थयज्ञ - पुरुषस्य करोमि यज्ञम् ॥ १२ ॥ अर्हत्पुराण - पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव । अस्मिन् ज्वलद्विमल - केवल - बोधवह्नौ, पुण्यं समग्रमह - मेकमना जुहोमि ॥१३ ॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ - प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

श्री वृषभो न : स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजित : ।
श्री संभव : स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दन : ॥
श्री सुमति : स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभ : ।
श्री सुपार्श्व : स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभ : ॥
श्री पुष्पदन्त : स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतल : ।
श्री श्रेयांस : स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्य : ॥
श्री विमल : स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्त : ।
श्री धर्म : स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिनाथ : ॥
श्री कुन्थु : स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथ : ।

श्री मल्लि : स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रत : ॥
श्री नमि : स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथ : ।
श्री पार्श्व : स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमान : ॥ पुष्पाञ्जलिं ।

नित्याप्रकम्पाद्भुत- केवलौघाः स्फुरन्मन : पर्यय - शुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः ॥ १ ॥
(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण कराना चाहिये)
कोष्ठस्थ- धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः ॥ २ ॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनघ्राणविलोकनानि ।
दिव्यान् मतिज्ञानवलाद्वहंताः , स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ३ ॥
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः ॥ ४ ॥
जंघावलि-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः ।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ५ ॥
अणिम्नि दक्षाःकुशलाःमहिम्नि लघिम्नि शक्ताःकृतिनो गरिम्णि ।
मनोवपुर्वाग्वलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः ॥ ६ ॥
सकामरूपित्त्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ७ ॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मपरं घोरगुणश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ८ ॥
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषंविषा दृष्टिविषंविषाश्च ।
सखिल्ल-विड्-जल्लमलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधुस्रवन्तोप्यमृतं स्रवन्तः ।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ १० ॥
(इति पुष्पांजलिं) (इति परम-ऋषि स्वस्ति मंगल विधानम्)

Scanned by CamScanner

श्री देवशास्त्रगुरु, विद्यमान बीस तीर्थंकर एवं अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समुच्चय पूजा

दोहा- देव शास्त्र गुरु नमन करि बीस तीर्थंकर ध्याय ।
सिद्धशुद्ध राजत सदा, नमूं चित्त हुलसाय ॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुसमूह ! श्री विद्यमान विंशति- तीर्थंकर समूह ! श्री अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठी समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक

(चाल - करले करले तू नित प्राणी, श्री जिनपूजन करले रे ।)

अनादि काल से जग में स्वामिन्, जलसे शुचिता को माना ।
शुद्ध निजातम सम्यक् रत्नत्रय, निधि को नहिं पहिचाना ।
अब निर्मल रत्नत्रय जल ले, देवशास्त्र गुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊं ॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः श्री विद्यमान विंशति- तीर्थंकरेभ्यः श्री अनन्तानन्त- सिद्ध- परमेष्ठिभ्यो जन्मजरा - मृत्यु - विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव आताप मिटावन की, निज में ही क्षमता समता है ।
अनजाने में अब तक मैंने, पर में की झूंठी ममता है ॥
चन्दन सम शीतलता पाने, श्री देवशास्त्र गुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान. ॥ चन्दनं. ॥ २ ॥

अक्षय पद बिन फिरा जगत की लख चौरासी योनि में ।
अष्ट कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिग लाया मैं ॥
अक्षय निधि निज को पाने को, श्री देवशास्त्र गुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान. ॥ अक्षतं. ॥ ३ ॥

पुष्प सुगन्धी से आतम ने, शील स्वभाव नशाया है ।
मन्मथ वाणों से बिंध करके, चहुँ गति दुःख उपजाया है ।
स्थिरता निज में पाने को, श्री देवशास्त्र गुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान. ॥ पुष्पं. ॥ ४ ॥

षट् रस मिश्रित भोजन से, यह भूख न मेरी शान्त हुई ।
आतम रस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई ।
सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देवशास्त्र गुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान. ॥ नैवेद्यं. ॥ ५ ॥

जड़ दीप विनश्वर को अब तक, समझा था मैंने उजियारा ।
निज गुण दरशायक ज्ञान दीपसे, मिटा मोहका अंधियारा ॥
ये दीप समर्पित करके मैं, श्री देवशास्त्र गुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान. ॥ दीपं. ॥ ६ ॥

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलायेगी ।
निज में निज की शक्ति ज्वाला, जो राग द्वेष नशायेगी ।
उस शक्ति दहन प्रकटानेको, श्री देवशास्त्र गुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान. ॥ धूपं. ॥ ७ ॥

पिस्ता बदाम श्रीफल लवंग, चरणन तुम ढिग मैं ले आया ।
आतमरस भीने निजगुण फल, मम मन अब उनमें ललचाया ।
अब मोक्ष महाफल पाने को, श्री देवशास्त्र गुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान. ॥ फलं. ॥ ८ ॥

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये ।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निज गुण प्रकट किये ।
ये अर्घ समर्पण करके मैं, श्री देवशास्त्र गुरु को ध्याऊं ।
विद्यमान. ॥ अर्घ्यं. ॥ ९ ॥

Scanned by CamScanner

जयमाला

नशे घातिया कर्म अर्हन्त देवा, करैं सुर असुर नर मुनि नित्य सेवा ।
दरश ज्ञान सुख बल अनन्त के स्वामी, छियालीस गुणयुक्त महाईश नामी ॥
तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी, महा मोह विध्वंसिनी मोक्षदानी ।
अनेकान्त मय द्वादशांगी बखानी, नमो लोकमाता श्री जैन वाणी ॥
विरागी अचारज उवज्झाय साधू , दरश ज्ञान भण्डार समता अराधूँ ।
नगन वेशधारी सु एका विहारी, निजानन्द मण्डित मुकति पथ- प्रचारी ॥
विदेह क्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजें, बिरहमान बन्दूँ सभी पाप भाजें ।
नमूं सिद्ध निर्भय निरामय सुधामी , अनाकुल समाधान सहजाभिरामी ॥

छन्द– देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध हृदय बिच धरले रे ।
पूजन ध्यान गान गुण करके, भवसागर जिय तरले रे ॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्य:, श्री विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्य: श्री अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

देवशास्त्र गुरु राय महासुख दाय जी ।
तीर्थंकर शुभ बीस सिद्ध जिनराय जी ।
पूजों मन वच काय हर्ष मन लाय जी ।
पुत्र मित्र धन बढ़े अमर पद पाय जी ॥

इत्याशीर्वाद:

नवदेव पूजा

इन्द्रस्य प्रणतस्य शेखर-शिखा-रत्नार्क-भासानख –
श्रेणी तेक्षण बिम्ब-शुम्भदलिभृद् दूरोल्लसत्पाटलम् ॥
श्रीसद्याडघ्रियुगं जिनस्य दधदप्यम्भोजसाम्यं रज–
स्त्यक्तं जाड्यहरं परं भवतु नश्चेतोऽर्पितं शर्मणे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वज्ञ वीतराग भगवदर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

तत्सर्व-प्रतिबन्धक-प्रविगम-प्रव्यक्त-सम्यक्त्व-विद् ।

दृग्वीर्या इव गाहनागुरु लघु प्रध्वस्तवाधदूधुरम् ॥
संजानामि यजामि सन्ततमभिध्यायामि गायामि तम् ।
संस्तौमि प्रणमामि यामि शरणं सिद्धं विशुद्धं प्रभुम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सकलकर्म-विमुक्ताय परब्रह्मपरमेश्वराय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आचारवत्वादि – गुणाष्टकाढ्यं
दशप्रकृष्ट – स्थिति – कल्पदीपम् ।
द्विषट्तप: संवृतमातषडभि
रावश्यकै: सूरिममुं नमाम: ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणान्वित श्रीमदाचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं ।

एकादशाङ्गाक - चतुर्दश पूर्व सर्व -
सम्यक् श्रुते: पठनपाठनपाटवो य: ।
कारुण्य पुण्य सरिदुद्ध समुद्रचित्त: ।
तं पाठकं मुनिमुदारगुणं नमाम: ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पंचविंशति गुणसमन्वित श्रीमदुपाध्यायपरमेष्ठिने अर्घ्यं ।

अस्नान भूशयनलोच-विचेलतैक -
भक्तोद्भक्त रदघर्षण शुद्ध वृत्तम् ॥ ५ ॥
पंचव्रतोद्ध समितीन्द्रियरोधषट्स-
दावश्यकोत्तमपरं प्रणमामि साधुम् ।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति गुणसमन्वित-साधु-परमेष्ठिने अर्घ्यं ॥ ५ ॥

अर्हद्वक्त्र - प्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालम्,
चित्रं बहर्थयुक्तं मुनिगुण-व्रषभैर्धारितं बुद्धिमद्भि: ।
मोक्षाग्र द्वारभूतं व्रत चरणफलं ज्ञेयभाव प्रदीपम्,
भक्त्या नित्यं प्रवन्दे श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोत्पन्नायै भगवत्यै वाग्देव्यै अर्घ्यं ।

Scanned by CamScanner

धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते,
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः ।
धर्मान्नास्ति परस्सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया,
धर्मे चितमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! माम् पालय ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञ वीतराग- प्रणीत- शाश्वत धर्माय अर्घ्यं ।

कृत्याकृत्रिम चारुचैत्य - निलयान्नित्यं त्रिलोकी-गतान् ।
वन्दे भावन – व्यंतर – द्युतिवरान् -स्वर्गामरावासगान् ॥
सद्गन्धाक्षत - पुष्प – चारुचरुभिर्दीपैश्च धूपैः फलैः ।
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शान्तये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्ति श्रीजिनालयेभ्योर्घ्यं ।

यावन्ति जिन चैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावन्ति सततं भक्त्या, त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिभ्यः श्रीवीतराग-प्रतिबिम्बेभ्यो अर्घ्यं ।

विनायक यन्त्र पूजा

स्थापना

(छन्द अनुष्टुप)

परमेष्ठिन् ! जगत्त्राण - करणे मङ्गलोत्तम ।
शरण्येतस्तिष्ठतु मे सन्निहितोस्तु पावन ॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मङ्गलोत्तम शरणभूता अत्र अवतरत अवतरत ।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मङ्गलोत्तम शरणभूता अत्र तिष्ठत तिष्ठत ।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मङ्गलोत्तम शरणभूता अत्र मम सन्निहितो भवत भवत ।

अष्टक (उपेन्द्रवज्रा)

पंकेरुहायातपरागपुञ्जैः सौगन्ध्यमद्भिः सलिलैः पवित्रैः ।
अर्हत्पदा भाषित मङ्गलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं मङ्गलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो जलं ॥ १ ॥

काश्मीर कर्पूरकृतद्रवेण, संसारतापापहतौ युतेन ॥ अर्हत् ॥

ॐ ह्रीं मङ्गलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो गन्धम् ॥ २ ॥

शाल्यक्षतैरक्षत - मूर्तिमद्भिरब्जादिवासेन सुगन्धवद्भिः । अर्हत् ।

ॐ ह्रीं मङ्गलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षतं ॥ ३ ॥

कदम्बजात्यादिभवैः सुरद्रुमैर्जातैर्मनोजात विपाशदक्षैः । अर्हत् ।

ॐ ह्रीं मङ्गलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो पुष्पं ॥ ४ ॥

पीयूषपिण्डैश्च शशांक कान्ति - स्पर्शद्भिरिष्टैर्नयनप्रियैश्च । अर्हत् ।

ॐ ह्रीं मङ्गलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो नैवेद्यं ॥ ५ ॥

ध्वस्तांधकारप्रसरैः प्रदीपै -र्घृतोद्भवैः रत्नविनिर्मितैर्वा । अर्हत् ।

ॐ ह्रीं मङ्गलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो दीपं ॥ ६ ॥

स्वकीय धूमेन नभोऽवकाशं, व्यापद्भिरुद्धैश्च सुगंधधूपैः । अर्हत् ।

ॐ ह्रीं मङ्गलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो धूपं ॥ ७ ॥

नारंगपूगादिफलैरनर्घ्यैः, हन्मानसादि - प्रियतर्पकैश्च । अर्हत् ।

ॐ ह्रीं मङ्गलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो फलं नि. ॥ ८ ॥

(शार्दूलविक्रीडति)

अंभश्चन्दन नन्दनाक्षततरूद् - भूतैर्निवेद्यैर्वरै –
र्दीपैर्धूपफलोतमैः समुदितैरेभिः सुवर्णस्थितैः ।
अर्हत्सिद्धसुसूरिपाठकमुनीन् लोकोत्तमान्मंगलान् ॥
प्रत्यूहौघनिवृत्तये शुभकृतः सेवे शरण्यानहम् ।

ॐ ह्रीं मङ्गलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं ॥ ९ ॥

Scanned by CamScanner

अथ प्रत्येक पूजनम्

कल्याणपंचककृतोदयमाप्तमीश -
मर्हंतमच्युत चतुष्टय - भासुरांगं ।
स्याद्वाद - वागमृत - सिंधु - शशांककोटि -
मर्चेजलादिभिरनंतगुणालयं तम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अनंतचतुष्टय समवसरणादिलक्ष्मीं विभ्रतेऽर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं ॥ १ ॥

कर्माष्टकेध्मंचयमुत्पथमाशु हुत्वा,
सद्ध्यानवह्नि - विसरे स्वयमात्मवन्तम् ।
निःश्रेयसामृतसरस्यथ सन्निनाय,
तं सिद्धमुच्चपददं परिपूजयामि ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठगणभस्मीकृते सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं नि. ॥ २ ॥

स्वाचारपंचकमपि स्वयमाचरंति,
ह्याचारयन्ति भविकान्निज - शुद्धिभाजः ।
तानर्चयामि विविधैः सलिलादिभिश्च,
प्रत्यूहनाशनविधौ निपुणान्पवित्रैः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पंचाचारपरायणाय आचार्य परमेष्ठिने अर्घ्यं नि. ॥ ३ ॥

अंगांगबाह्य - परिपाठन - लालसाना-
मष्टांगज्ञान - परिशीलन - भावितानाम् ।
पादारविंदयुगलं खलु पाठकानां,
शुद्धैर्जलादिदसुभिः परिपूजयामि ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं द्वादशाङ्ग पठन-पाठनोद्यताय उपाध्याय परमेष्ठिने अर्घ्यं नि. ॥ ४ ॥

आराधना सुखविलास -महेश्वराणां,
सद्धर्मलक्षणमयात्म - विकस्वराणाम् ।
स्तोतुं गुणान् गिरिवनादि - निवासिनां वै,
एषोऽर्घतश्चरणपीठभुवं यजामि ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशप्रकार चारित्रधारकसाधु - परमेष्ठिने अर्घ्यं नि. ॥ ५ ॥

अर्हन्मङ्गलमर्चामि जगन्मङ्गलदायकम् ।
प्रारब्ध - कर्म -विघ्नौघ - प्रलयप्रदमब्मुखैः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हमङ्गलाय अर्घ्यं नि. ॥ ६ ॥

चिदानन्दलसद्वीचि मालिनं गुणशालिनम् ।
सिद्धमङ्गलमर्चेऽहं सलिलादिभिरुज्जवलैः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धमङ्गलाय अर्घ्यं नि. ॥ ७ ॥

बुद्धिक्रियारसतपो विक्रयौषधि - मुख्यकाः ।
ऋद्धयो यं न मोहन्ति साधुमङ्गलमर्चये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री साधुमङ्गलाया अर्घ्यं नि. ॥ ८ ॥

लोकालोक - स्वरूपज्ञ, प्रज्ञप्तं धर्ममङ्गलम् ।
अर्चे वादित्रनिर्घोष - पूरिताश जलादिभिः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री केवलिप्रज्ञप्तधर्ममङ्गलाय अर्घ्यं नि. ॥ ९ ॥

लोकोत्तमोऽर्हन् जगतां भवबाधाविनाशकः ।
अर्च्यतेऽर्घ्येण स मया कुकर्मगणहानये ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हद् लोकोत्तमायार्घ्यं नि. ॥ १० ॥

विश्वाग्रशिखरस्थायी, सिद्धो लोकोत्तमो मया ।
मह्यते महसामंदचिदानन्द सुमेदुरः ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धलोकोत्तमायार्घ्यं नि. ॥ ११ ॥

रागद्वेष - परित्यागी साम्यभावावबोधकः ।
साधुलोकोत्तमोऽर्घ्येण, पूज्यते सलिलादिभिः ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्री साधुलोकोत्तमायार्घ्य नि. ॥ १२ ॥

उत्तमक्षमया भास्वान्सद्धर्मो विष्टपोत्तमः ॥
अनन्तसुखसंस्थानं यज्यतेऽम्भो क्षतादिभिः ॥ १३ ॥

Scanned by CamScanner

ॐ ह्रीं श्री केवलिप्रज्ञप्तधर्मलोकोत्तमायार्घ्यं नि. ॥ १३ ॥

सदाऽर्हन्शरणं मन्ये नान्यथा शरणं मम ।
इति भावविशुद्ध्यर्थमर्हयामि जलादिभिः ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हच्छरणायार्घ्यं नि. ॥ १४ ॥

व्रजामि सिद्धशरणं परावर्तनपंचकम् ।
भित्त्वा स्वसुखसंदोह - सम्पन्नमिति पूजये ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धशरणायार्घ्यं नि. ॥ १५ ॥

आश्रये साधु-शरणं शिद्धान्त-प्रतिपादनैः ।
न्यक्कृताज्ञानतिमिरमिति शुद्ध्या यजामि तम् ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्री साधुशरणायार्घ्यं नि. ॥ १६ ॥

धर्म एव सदा बन्धुः स एव शरण मम ।
इह वान्यत्र संसारे इति तं पूजयेऽधुना ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं श्री केवलिप्रज्ञप्तधर्म - शरणायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १७ ॥

(वसन्ततिलका)

संसार-दुःखहनने निपुणं जनानां,
नाद्यंतचक्रमिति सप्तदश प्रमाणम्
संपूजये विविधभक्तिभरावनम्रः,
शान्तिप्रदं भुवनमुख्यपदार्थसार्थैः ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमंत्रेभ्यः समुदायार्घ्यं नि. ॥ १८ ॥

नोट — यहाँ पंच नमस्कार मंत्र का ९ बार जाप करना चाहिए ।

जयमाला (वसन्ततिलका)

विघ्नप्रणाशनविधौ सुरमर्त्यनाथा,
अग्रेसरं जिन वदंति भवंतमिष्टम् ।
अनाद्यनंतयुगवर्तिनमत्र कार्ये,
गार्हस्थ्यधर्मविहितेऽहमपि स्मरामि ॥ १९ ॥

विनायकः सकलधर्मिजनेषु धर्मम्,
द्वेधा नयत्यविरतं दृढ़सप्तभंग्या ॥
यद्ध्यानतो नयनभावसमुज्झनेन,
बुद्धः स्वयं सकलनायक इत्यवाप्तेः ॥२० ॥

(भुजङ्गप्रयात)

गणानां मुनीनामधीशत्वतस्ते, गणेशाख्यया ये भवन्तं स्तुवंति ।
सदा विघ्नसंदीहशान्तिर्जनानां, करे संलुठत्यायत श्रेयसानाम् । ३ ।
त्वं मङ्गलानां परमं जिनेन्द्र, समाहृतं मङ्गलमस्ति लोके ।
त्वत्पूजकानामपयान्ति विघ्नाः क्षिप्रं गरुन्मत् सविधेय सर्पाः । ४ ।
तव प्रसादात् जगतां सुखानि, स्वयं समायान्ति न चात्र चित्रम् ।
सूर्योदये नाशमुपैति नूनम्, तमो विशालं प्रवलं च लोके ॥ ५ ॥
यतस्त्वमेवासि विनायको मे, दृष्टेष्टयोगानवरुद्धभावः ।
त्वन्नाममात्रेण पराभवन्ति विघ्नारयस्तर्हि किमत्र चित्रम् ॥ ६ ॥

घत्ता (मालिनी छन्द)

जय जय जिनराज ! त्वद्गुणान् को व्यनक्ति ।
यदि सुरगुरुरिन्द्रः कोटिवर्ष-प्रमाणम् ॥
वदितुमभिलषेद्वा पारमाप्नोति नोचेत् ।
कथमिह मनुष्यः स्वल्प-बुद्ध्या समेतः ॥

ॐ ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमंत्रेभ्यो जयमालार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

॥ इष्ट प्रार्थना ॥

श्रियं बुद्धिमनाकुल्यं धर्म-प्रीति-विवर्द्धनम् ।
गृहिधर्मे स्थितिं भूयः श्रेयांसि मे दिशत्वरा ॥

इत्याशीर्वादः ।

Scanned by CamScanner

रतन पोल पहुँचे ऋषभ, तोरण घण्टा द्वार ।
रतन फूल वरषे घने, चित्र विचित्र अपार ॥ २३ ॥
चौंरी मण्डप जगमगै, बहुविधि शोभै ऐन ।
चारों दिश चिलकें परे, कञ्चन कलश रु बैन ॥ २४ ॥
मोती झालर झूमका, झलकै हीरा होर ।
मानो आनन्द मेघ की, झरी लगी चहुँ ओर ॥ २५ ॥
वर कन्या बैठे जहाँ, देखत उपजै प्रीति ।
पिकवैनी मृगलोचनी, कामिनी गावें गीत ॥ २६ ॥
कन्यादान विधान विधि, और उचित आचार ।
यथायोग्य व्यवहार सब, कीनों कुल अनुसार ॥ २७ ॥
इहि विधि विविध उछाह सों, भये मङ्गलाचार ।
कीनी सज्जन वीनती, शोभा दिये अपार ॥ २८ ॥
हर्षित नाभि नरेश मन, हर्षित कच्छ सुकच्छ ।
मरुदेवी आनन्द थयो, हर्षे परिजन पच्छ ॥ २९ ॥
यह विवाह मङ्गल महा, पठत बढ़त आनन्द ।
सबको सुख सम्पति करो, नाभिराय कुलचन्द ॥ ३० ॥
वंशबेल बाढ़ै सुखद, बढ़ै धर्म मर्याद ।
वर कन्या जीवै सदा, ऋषभ देव परसाद ॥३१॥ इति ॥

प्रदान व वरण

वर के सम्मुख उपस्थित होकर क्रमशः कन्या का मामा और पिता, कन्या के प्रपितामह (परदादा), पितामह (दादा) और पिता (अपने) नामोच्चारण पूर्वक कहें कि - "अमुक की" पड़पोती, अमुक की पोती, अमुक की (मेरी) पुत्री अमुक के पुत्र, अमुक नाम वाले आपको देना चाहता हूँ । आप इसे सहर्ष स्वीकार कीजिये । वर इसके उत्तर में सिद्ध भगवान

के प्रतिबिम्ब या सिद्ध यन्त्र को नमस्कार करके कहे कि - "वृणेऽहम्" अर्थात् मैं वरता हूँ तथा मुझे सहर्ष स्वीकार है । पश्चात् कन्या का पिता कहे कि - "इसका धर्म से पालन करना" इसके उत्तर में वर कहे कि - "मैं धर्म से, अर्थ से और काम से इसका पालन करूँगा" । इसके पश्चात् कन्या का पिता जल से भरी हुई झारी को उठाकर (इस समय दोनों पक्ष के पुरुषों और सौभाग्यवती स्त्रियों को 'वृणीध्वं, वृणीध्वम्' अर्थात् इस कन्या को 'वरिये-वरिये' इस प्रकार कहना चाहिये) गृहस्थाचार्य द्वारा बुलवाये गये निम्न मन्त्र को बोले-

अमुक + वर्ष में, अमुक मास में, अमुक पक्ष में, अमुक तिथि में, अमुक वार में, अमुक गोत्र वाला मैं अमुक नामवाली अपनी कन्या को प्रदान करता हूँ । ऐसा कहकर -

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्द्धमानाय श्रीबलायुरारोग्यसंतानाभिवर्द्धनं भवतु इमां कन्यामस्मै कुमाराय ददामि ह्रीं क्लीं ह्रं सः स्वाहा ।

इस मन्त्र को पढ़कर हाथ में ली हुई झारी में से सुगन्धित जल की धारा वर के दाहिने हाथ की हथेली में कन्या की बायीं हाथ की हथेली उससे स्पर्श कराते हुए डालकर कन्या प्रदान करे । इसके पश्चात् सौभाग्यवती स्त्रियाँ वर और कन्या के मस्तक पर मङ्गल रूप अक्षत क्षेपण करें । तदनन्तर गृहस्थाचार्य प्रथम कटनी पर स्थित सिद्ध यन्त्र पूजा प्रारम्भ करावे ।

सिद्ध पूजा

स्थापना (इन्द्रवज्रा)

सिद्धान् प्रसिद्धान् वसुकर्ममुक्तान् ।
त्रैलोक्यशीर्षे स्थितचिद्विलासान् ॥

+ अमुक शब्द की जगह जो नाम हो वह बोलना चाहिए ।

Scanned by CamScanner

संस्थापये भावविशुद्धिदातृन् ।
सन्मङ्गलं - प्राज्यसमृद्धयेऽहम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं वसुकर्मरहित सिद्धेभ्यो पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि ।
ॐ ह्रीं नीरजसे नमः (भूमिशुद्धिः)
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः (जलम्)
ॐ ह्रीं शीलगंधाय नमः (चन्दनम्)
ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः (अक्षतम्)
ॐ ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पम्)
ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः (नैवेद्यम्)
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः (दीपम्)
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपम्)
ॐ ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः (फलम्)

(रथोद्धता)

अष्टकर्मगणनाशकारकान्, कष्टकुण्डलिसुपुष्टगारुडान् ।
स्पष्टबोधपरिमीतविष्टपान् अर्घ्यतोऽघनाशनाय पूजये ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं वसुकर्मरहितसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

इसके बाद बीच की कटनी में विराजमान -

श्रुत पूजा

(रथोद्धता)

द्वादशांगमखिलं श्रुतं मया, धर्मपालनमहोत्सवेऽधुना ।
पूज्यते यदधिधर्मसंभवो, द्वेधषैष जगतां प्रसीदति ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं द्वादशांगश्रुतायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इसके बाद तीसरी कटनी में विराजमान -

गुरु पूजा तथा धर्म चक्र पूजा

(रथोद्धता)

ऋद्धयो बलरसादि - विक्रियौषध्यसंज्ञक - महानसादिकाः ।
यत्क्रमांबुरुहवासमासते, तान्गुरूनभिमहामि वार्मुखैः ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं महर्द्धिधारकपरमर्षिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमङ्गलमिदं पदाम्बुजे, भासते शतसुमङ्गलौघदम् ।
धर्मचक्रमभिपूजये वरं, कर्मचक्र – परिनाशनोद्यतम् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं धर्मचक्रायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

हवन

ॐ वेदी के सम्मुख अग्निकुण्ड स्थापन करे, उसमें ॐ लिखे और फिर समिध स्थापन करे ।

इस समय हवन करने योग्य द्रव्यों को अलग रक्खे और कपूर से हवनकुण्ड में "ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं स्वाहा अग्निं स्थापयामि" यह मन्त्र बोलकर अग्नि प्रज्ज्वलित करे । तदनन्तर हवनकुण्ड में नीचे लिखे हुए तीन श्लोक बोलकर अलग-अलग तीन अर्घ चढ़ावे ।

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थनाथपरिनिर्वृति पूज्यकाले ।
आगत्य वह्निसुरपा मुकुटोल्लसद्भिः ॥
वह्निव्रजैर्जिनपदेहमुदारभक्त्या ।
देहुस्तमग्निमहमर्चयितुं दधामि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं प्रथमे चतुरस्रे तीर्थङ्करकुण्डे गार्हपत्याग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

(उपजाति)

गणाधिपानां शिवयातिकालेऽग्नींद्रोत्तमांगस्फुरदग्निरेषः ॥
संस्थाप्य पूज्यः समयाह्वनीयो, विघ्नौघशान्त्यै विधिनाहुताशः ॥

Scanned by CamScanner

ॐ ह्रीं श्री वृत्ते द्वितीय गणधरकुण्डे आह्वनीयाग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

(उपजाति)

श्रीदक्षिणाग्निः परिकल्पितश्च, किरीटदेशात्प्रणताग्निदेवै -
निर्वाणकल्याणकपूतकाले तमर्चये विघ्नविनाशनाय ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकोणेसामान्यकेवलिकुण्डे दक्षिणाग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

तदनन्तर शुद्ध घी से निम्नलिखित आहूतियाँ देवें —

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं सूरिभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं साधुभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं जिनधर्मेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं जिनबिम्बेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं जिन चैत्यालयेभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय : स्वाहा । ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय : स्वाहा । ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय : स्वाहा ।

तत्पश्चात् —

(नीचे लिखे हुए मन्त्रों को उच्चारण करते समय हरेक मन्त्र बोलने के साथ गृहस्थाचार्य चाटू से घृत की आहुति दे तथा वर व कन्या सीधे हाथ से तर्जनी (अंगूठे के पास वाली) अंगुली को अलग रखते हुए साकल्य से आहुति दे । मंत्र के बाद स्वाहा शब्द का उच्चारण स्पष्ट करें ।)

अथ पीठिका मन्त्र

ॐ सत्यजाताय नमः ॥ १ ॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः ॥ २ ॥ ॐ परमजाताय नमः ॥ ३ ॥ ॐ अनुपमजाताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ स्वप्रधानाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अचलाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ अक्षयाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ अव्याबाधाय नमः ॥ ८ ॥

ॐ अनन्त ज्ञानाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ अनंत दर्शनाय नमः ॥ १० ॥ ॐ अनंत वीर्याय नमः ॥ ११ ॥ ॐ अनंत सुखाय नमः ॥ १२ ॥ ॐ नीरजसे नमः ॥ १३ ॥ ॐ निर्मलाय नमः ॥ १४ ॥ ॐ अच्छेद्याय नमः ॥ १५ ॥ ॐ अभेद्याय नमः ॥ १६ ॥ ॐ अजराय नमः ॥ १७ ॥ ॐ अमराय नमः ॥ १८ ॥ ॐ अप्रमेयाय नमः ॥ १९ ॥ ॐ अगर्भवासाय नमः ॥ २० ॥ ॐ अक्षोभाय नमः ॥ २१ ॥ ॐ अविलीनाम नमः ॥ २२ ॥ ॐ परमघनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ परमकाष्ठायोगरुपाय नमः ॥२४॥ ॐ लोकाग्रवासिने नमोनमः ॥ २५ ॥ ॐ परमसिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ २६ ॥ ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ २७ ॥ ॐ केवलिसिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ २८ ॥ ॐ अंतः कृत्सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ २९ ॥ ॐ परम्परासिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ३० ॥ ॐ अनादिपरम्परा सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ३१ ॥ ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ३२ ॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे आसन्नभव्य निर्वाणपूजार्हअग्नीन्द्राय स्वाहा ॥ ३३ ॥

(इस प्रकार ३३ आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा काम्य मन्त्र पढ़कर एक आहुति देवे और पुष्प ले अपने तथा सब पास बैठने वालों के ऊपर डाले)

सेवाफलं षट्पस्मस्थानं भवतु, दीर्घ स्वस्थजीवनं भवतु, रत्नत्रयावाप्तिर्भवतु स्वाहा ।

अथ जातिमन्त्र

ॐ सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्ये ॥ १ ॥ ॐ अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥ ॐ अर्हन्मातुः शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥ ॐ अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥ ॐ अनादिगमनस्य शरणं प्रपद्ये ॥ ५ ॥ ॐ अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्ये ॥ ६ ॥

Scanned by CamScanner

ॐ रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्ये ॥७॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ज्ञाममूर्ते ज्ञानमूर्ते सरस्वति सरस्वति स्वाहा ॥८॥

(इस प्रकार ८ आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वाद सूचक काम्यमन्त्र पढ़कर एक आहुति देवे ।)

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, दीर्घ स्वस्थजीवनं भवतु, रत्नत्रयावाप्तिर्भवतु स्वाहा ।

अथ निस्तारकमन्त्र

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥२॥ ॐ षट्कर्मणे स्वाहा ॥३॥ ॐ ग्रामपतये स्वाहा ॥४॥ ॐ अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा ॥५॥ ॐ स्नातकाय स्वाहा ॥६॥ ॐ श्रावकाय स्वाहा ॥७॥ ॐ देवब्राह्मणाय स्वाहा ॥८॥ ॐ सुब्राह्मणाय स्वाहा ॥९॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥१०॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे निधिपते निधिपते वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा ॥११॥

(इस प्रकार ११ आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वाद सूचक काम्यमन्त्र पढ़कर एक आहुति देवे)

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, दीर्घ स्वस्थजीवनं भवतु, रत्नत्रयावाप्तिभंवतु स्वाहा ।

अथ ऋषिमन्त्र

ॐ सत्यजाताय नमः ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः ॥२॥ ॐ निर्ग्रन्थाय नमः ॥३॥ ॐ वीतरागाय नमः ॥४॥ ॐ महाव्रताय नमः ॥५॥ ॐ त्रिगुप्ताय नमः ॥६॥ ॐ महायोगाय नमः ॥७॥ ॐ विविधयोगाय नमः ॥८॥ ॐ विविधर्द्धये नमः ॥९॥ ॐ अङ्गधराय नमः ॥१०॥ ॐ पूर्वधराय नमः ॥११॥ ॐ गणधराय नमः ॥१२॥ ॐ परमर्षिभ्यो नमोनमः ॥१३॥

ॐ अनुपमजाताय नमो नमः ॥१४॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे भूपते भूपते नगरपते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा ॥१५॥

(इस प्रकार १५ मन्त्रों को १५ आहुति देकर फिर नीचे लिखा आशीर्वाद सूचक काम्यमन्त्र पढ़कर एक आहुति देवे)

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, दीर्घ स्वस्थजीवनं भवतु, रत्नत्रयावाप्तिर्भवतु स्वाहा ।

अथ सुरेन्द्र मन्त्र

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥२॥ ॐ दिव्यजाताय स्वाहा ॥३॥ ॐ दिव्यार्चिजाताय स्वाहा ॥४॥ ॐ नेमिनाथाय स्वाहा ॥५॥ ॐ सौधर्माय स्वाहा ॥६॥ ॐ कल्पाधिपतये स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुचराय स्वाहा ॥८॥ ॐ परमपरेन्द्राय स्वाहा ॥९॥ ॐ अहमिन्द्राय स्वाहा ॥१०॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥११॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥१२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे कल्पपते कल्पपते दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते वज्रनामन् वज्रनामन् स्वाहा ॥१३॥

(इस प्रकार १३ मन्त्रों की १३ आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वाद सूचक काम्यमन्त्र पढ़कर एक आहुति देवे)

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु , दीर्घ स्वस्थजीवनं भवतु, रत्नत्रयावाप्तिर्भवतु स्वाहा ।

परमराजादि मन्त्र

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥२॥ ॐ अनुपमेन्द्राय स्वाहा ॥३॥ ॐ विजयार्च्यजाताय स्वाहा ॥४॥ ॐ नेमिनाथाय स्वाहा ॥५॥ ॐ परमजाताय स्वाहा ॥६॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥८॥

Scanned by CamScanner

ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यगदृष्टे उग्रतेजः उग्रतेजः दिशाञ्जन दिशाञ्जन नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा ॥ ९ ॥

इस प्रकार ९ मन्त्रों की आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वाद सूचक काम्यमन्त्र पढ़कर आहुति देवे ।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, दीर्घ स्वस्थजीवनं भवतु, रत्नत्रयावाप्तिर्भवतु स्वाहा ।

परमेष्ठि मन्त्र

ॐ सत्यजाताय नमः ॥ १ ॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः ॥ २ ॥ ॐ परमजाताय नमः ॥ ३ ॥ ॐ परमार्हताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ परमरूपाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ परमतेजसे नमः ॥ ६ ॥ ॐ परमगुणाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ परमस्थानाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ परमयोगिने नमः ॥ ९ ॥ ॐ परमभाग्याय नमः ॥ १० ॥ ॐ परमर्द्धये नमः ॥ ११ ॥ ॐ परमप्रसादाय नमः ॥ १२ ॥ ॐ परमकांक्षिताय नमः ॥ १३ ॥ ॐ परमविजयाय नमः ॥ १४ ॥ ॐ परमविज्ञानाय नमः ॥ १५ ॥ ॐ परमदर्शनाय नमः ॥ १६ ॥ ॐ परमवीर्याय नमः ॥ १७ ॥ ॐ परमसुखाय नमः ॥ १८ ॥ ॐ परमसर्वज्ञाय नमः ॥ १९ ॥ ॐ अर्हते नमः ॥ २० ॥ ॐ परमेष्ठिने नमः ॥ २१ ॥ ॐ परमनेत्रे नमोनमः ॥ २२ ॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे त्रैलोक्यविजय त्रैलोक्यविजय धर्ममूर्त्ते धर्ममूर्त्ते धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा ॥ २३ ॥

(इस प्रकार २३ मन्त्रों की २३ आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वाद सूचक काम्यमन्त्र पढ़कर एक आहुति देवे ।)

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, दीर्घ स्वस्थजीवनं भवतु, रत्नत्रयावाप्तिर्भवतु स्वाहा ।

धूपैः सन्धूपितानेक - कर्मभिर्धूपदाषिनः ।
अर्चयामि जनाधीश, सदागमगुरून् गुरून् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री मज्जिनश्रुतगुरुभ्यो नमः धूपम् ।

सुरभीकृतदिग्व्रातैर्धूपधूमैर्जगत्त्रयैः ।
यजामि जिनसिद्धेश, सूर्य्यूपाध्यायसद्गुरून् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पञ्चपरमेष्ठिभ्यो नमः धूपम् ।

मृद्वग्निसंगमसमुज्वलतोरुधूमैः
कृष्णागरुप्रभृतिसुन्दर वस्तुधूपैः ।
प्रीत्या नटद्भिरिव ताण्डवनृत्यमुच्चैः ।
कर्मारिदारुदहनं जिनमर्चयामि ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने धूपम् ।

गोत्रक्षयसंभवसंततसंभव, सद्गुरुलघुतारूपपरं ।
सर्गमसर्गमपीतमनुक्षण, मुज्झितसर्गासंर्गभरम् ॥
कृष्णागुरुधूपैः सुरभितधूपैर्धूपैः स्पष्टहरिद्रूपै-
र्यायजमः सिद्धं सर्वविशुद्धं बुद्धमरुद्धं गुणरुद्धम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने धूपम् ।

हुत्वा स्वमप्यगुरुभिः सुरभीकृताशै -,
रग्नौ समुच्छलितसंभृतवृन्दधूपैः ।
संधूपयामि चरणं शरणं शरण्यं ।
पुण्यं भवभ्रमहरैर्गणिनां मुनीनाम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं आचार्य परमेष्ठिने धूपम् ।

संधूपिताखिलदिशोघनशङ्कयेह,
वर्हिव्रजं स्वनटनादिव नर्तयद्भिः ।
मृदग्निसंगतितताग्रुधूपधूमैः,
श्री पाठकं क्रमयुगं वयमामहामः ॥

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिने धूपम् ।

Scanned by CamScanner

स्वमग्नौ विनिक्षिप्य दौर्गंध्यबंधम्,
दशाशास्यमुच्चैः करोति त्रिसंध्यम् ।
तदुद्दामकृष्णागुरुद्रव्यधूपैः ।
यजे साधुसाधुंनटद्यक्तरूपैः ।
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने धूपम् ।
धूपैः संधूपितानेककर्मभिर्धूपदायिनः ।
वृषभादिजिनाधीशान्, वर्द्धमानान्तकान्यजे ।
ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति - जिनेभ्यो धूपं ।
उपर्युक्त विधि से हवन करने के पश्चात् —

सप्तपदी पूजा

स्थापना

सज्जातिगार्हस्थ्यपरिवव्रत्वम्, सौरैंद्रसाम्राज्यजिनेश्वरत्वम् ॥
निर्वाणकं चेति पदानि सप्त, भक्त्या यजेहं जिनपादपद्यम् ॥
ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यः पुष्पाजलिं क्षिपेत् ।
विमलशीतलसज्जलधारया
सविधबन्धुरसीकरसारया ।
परमसप्त - सुस्थानस्वरूपकं
परिभजामि सदाष्टविधार्चनैः ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो जलम् ।
मसृणकुंकुम - चन्दनसद्रवैः
सुरभितागतषट्पदसद्रसैः ॥ परम. ॥
ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो चन्दनम् ।
विपुलनिर्मलतंदुलसंचयैः,
कृतसुमौक्तिककल्पकनिश्चयैः ॥ परम. ॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो अक्षतम् ।
कुसुमचंपक - पंकजकुन्दकैः,
सहजजाति - सुगंध - विमोदकैः ॥ परम. ॥
ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो पुष्पम् ।
सकललोक - विमोदनकारकैः
चरुवरैः सुसुधाकृतिधारकैः ॥ परम. ॥
ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो नैवेद्यम् ।
तरलतारसुकांतिसुमण्डनै,
सदनरत्नचयैरघखण्डनैः, ॥ परम. ॥
ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो दीपम् ।
अगरुधूपभवेन सुगंधिना,
भ्रमरकोटिसमेन्द्रियबंधिना ॥ परम. ॥
ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो धूपम् ।
सुखदपक्वसुशोभनसत्फलैः
क्रमुकनिंबुकमोचसुतांगतैः ॥ परम. ॥
ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो फलम् ।
जिनवरागमसद्गुरुमुख्यकान् ।
प्रवियजे गुरुसद्गुणमुख्यकान् ॥
सुशुभचन्द्रतरान् कुसुमोत्करैः ।
समयसारपरान् पयसादिकैः ॥
ॐ ह्रीं श्री सप्तपरमस्थानेभ्यो अर्घ्यं ।

गठजोड़ा

सभामण्डप के समस्त स्त्री-पुरुष के सामने सौभाग्यवती स्त्री के द्वारा कन्या की ओढ़नी/साड़ी के पल्ले में चवन्नी १ सुपारी, हल्दी गांठ,

Scanned by CamScanner

सरसों, पुष्प रखकर वर के दुपट्टे के पल्ले (बीटली) के साथ निम्न मन्त्र बोलते हुए गठजोड़ा करादे ।

अस्मिन् जन्मन्येषबंधो द्वयोर्वै, कामे धर्मे व गृहस्थत्वभाजि ।
योगो जातः पञ्चदेवाग्निसाक्षी, जायापत्योरञ्चलग्रन्थिबन्धात् ॥ १ ॥

गठजोड़े का मतलब यह है कि इन दोनों दम्पत्तियों के समस्त लौकिक और धार्मिक कार्यों में सर्वदा मजबूत प्रेमगांठ है - जो कभी नहीं खुल सकती । क्योंकि यह देव, अग्नि और पंचों की साक्षी में बँधी है ।

हथलेवा

इसके पश्चात् कन्या के पिता कन्या के बायें हाथ में और वर के दाहिने हाथ में पिसी हुई हल्दी को जल में घोल कर लेप करे, यानी पीले हाथ करे - इसे ही पीले हाथ कहा जाता है । इसके बाद गीली मेंहदी व एक रुपया वर के सीधे हाथ में रखकर उस पर कन्या का बांया हाथ निम्न श्लोक बोलते हुए जोड़ दे । (कहीं यह क्रिया भाई भौजाई करते हैं, कहीं सौभाग्यवती स्त्रियाँ करती हैं और कहीं पिता करते हैं ।)

हारिद्रपंकमवलिप्य सुवासिनीभि -
र्दत्तं द्वयो जनकयोःखलु तौ गृहीत्वा ।
वामं वरं निजसुतां भवमग्रपाणिम्
लिम्पेद्वरस्य च कर द्वय योजनार्थं ॥

फेरे सप्तपदी

सप्तपरमस्थान की प्राप्ति जनावने के लिए उस वेदी के चारों तरफ पहले कन्या को आगे और वर को पीछे रखकर क्रमशः निम्नलिखित अर्घ बोलते हुए छह फेरे दिलवावे । इस समय महिलायें फेरों के मांगलिक गीत गावें । छह फेरों के बाद पहले की तरह वर तथा कन्या को अपने-अपने स्थान पर खड़ा कर दें ।

१. ॐ ह्रीं सज्जाति परमस्थानाय अर्घ्यम् ।
२. ॐ ह्रीं सद्ग्रहस्थ परमस्थानाय अर्घ्यम् ।
३ ॐ ह्रीं पारिव्राज्य परमस्थानाय अर्घ्यम् ।
४. ॐ ह्रीं सुरेन्द्र परमस्थानाय अर्घ्यम् ।
५. ॐ ह्रीं साम्राज्य परमस्थानाय अर्घ्यम् ।
६. ॐ ह्रीं आर्हन्त्य परमस्थानाय अर्घ्यम् ।

ऐसा करने के पश्चात् नीचे लिखे सप्त वाक्यों द्वारा वर और कन्या के आपस में प्रतिज्ञाबद्ध हो जाने पर फिर सातवें फेरे में वर आगे और कन्या को पीछे होना चाहिए । छठे फेरे तक दुलहिन कन्या ही कहलाती है, वधू नहीं समझी जाती । किन्तु सातवें फेरे में वह वधू हो जाती है, क्योंकि सातवीं प्रदक्षिणा में वह प्रतिज्ञाबद्ध होकर पति की अनुगामिनी बन जाती है ।

वर की तरफ से सात प्रतिज्ञायें

१. मम कुटुम्बजनानां यथायोग्य-विनयशुश्रुषा करणीया ।
मेरे कुटुम्बियों की यथायोग्य सेवा, विनय, आदर-सत्कार करना ।

२. ममाज्ञा न लोपनीया ।
मेरी आज्ञा को कभी भंग मत करना ।

३. कटुनिष्ठुरवाक्यं न वक्तव्यम् ।
कडुवा और मर्मभेदी वचन मत बोलना ।

४. सत्पात्रादिजनेभ्यो गृहागतेभ्यः आहारादिपाने कलुषितं मनो न कार्यम् ।
सत्पात्रादि (मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका आदि) के घर आने पर अपने मन को कलुषित मत करना ।

५. रात्रौ परगृहे न गन्तव्यम् ।
रात को दूसरे के घर पर बिना पूछे मत जाना ।

Scanned by CamScanner

६. बहुजनसंकीर्णस्थाने न गन्तव्यम् ।

जहाँ बहुत से आदमी जमा हो रहे हों- भीड़भाड़ हो, ऐसे स्थान पर मत जाना ।

७. कुत्सितधर्मि-मद्यपायिनां गृहे न गन्तव्यम् ।

जिनका आचरण खराब है - ऐसे माँस मद्यादि सेवन करने वाले कुत्सित धर्मियों के घर पर मत जाना ।

एतानि मदुक्तानि वचनानि यदि स्वीकारोषि तदा मम वामाङ्गी भव ।

यदि मेरी इन सात शर्तों को तुम मंजूर करो तो मेरी पत्नी हो सकती हो ।

तब वधू कहे -

भगवंतः कल्याणं करिष्यन्ति ।

ये समस्त प्रतिज्ञायें मुझे मंजूर हैं ।

कन्या की तरफ से सात प्रतिज्ञायें

१. अन्यस्त्रीभिः सार्द्धं क्रीड़ा न करणीया ।

अन्य स्त्रियों के साथ क्रीड़ा मत करना ।

२. वेश्यागृहे न गन्तव्यम् ।

वेश्यादि खराब स्त्रियों के घर पर मत जाना ।

३. द्यूतक्रीड़ा न कार्या ।

जुआ मत खेलना ।

४. सदुद्योगाद् द्रव्यमुपार्ज्य वस्त्राभरणैः रक्षणीया ।

न्यायाकूल उद्योग धन्धे से धन कमाकर वस्त्राभरण से मेरी रक्षा करना ।

५. धर्मस्थानगमने न वर्जनीया ।

मन्दिर तीर्थ-क्षेत्रादि धर्मस्थान पर जाने से मुझे मत रोकना ।

६. गुप्त वार्ता न करणीया ।

घर सम्बन्धी कोई बात मुझसे गुप्त मत रखना, ताकि परस्पर सलाह कर सकें ।

७. मम गुप्त वार्ता अन्याग्रे न कथनीया ।

मेरी गुप्त बात दूसरे के आगे प्रकाशित मत करना ।

'भगवन्तः कल्याणं करिष्यन्ति' इति वरो वदेत् ।

इसके उत्तर में वर कहे कि ये सातों प्रतिज्ञायें मुझे मंजूर हैं ।

संशोधित महत्वपूर्ण प्रतिज्ञायें

यदि वर कन्या दोनों की सम्मिलित प्रतिज्ञायें कराना अभीष्ट हो तो निम्न प्रतिज्ञायें करायें -

१. हम जीवन भर स्वपति एवं स्वपत्नी सन्तोष व्रत का पालन करेंगे ।

२. हम एक दूसरे की धार्मिक स्वतन्त्रता में बाधक नहीं होंगे ।

३. हम एक दूसरे को वैयक्तिक उन्नति में सहायक होंगे ।

४. हम दहेज एवं अन्य किसी भी प्रकार के लेन देन को कोई महत्व नहीं देते हुए न्यायोपार्जित धन का उपभोग करेंगे ।

५. हम रोग एवं अन्य सभी प्रकार की विपत्तियों में एक दूसरे की सक्रिय सेवा करेंगे ।

६. हम एक दूसरे की सम्मति का पूर्ण सम्मान करते हुए कौटुम्बिक जीवन को सफल बनायेंगे ।

७. हम धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यों में यथाशक्ति सहयोग प्रदान करेंगे ।

उपर्युक्त सातों प्रतिज्ञायें हो जाने के बाद सातवें फेरे में वर को आगे और कन्या को पीछे करते हुए सातवें फेरे के बाद निम्न मन्त्र बोलकर अर्घ्य चढ़ावे ।

Scanned by CamScanner

७. ॐ ह्रीं निर्वाण-परमस्थानाय अर्घ्यम् ।

सातों फेरे हो जाने पर वर और कन्या वेदी के सामने ज्यों के त्यों खड़े हो जायें, बैठे नहीं ।

यहाँ पर गृहस्थाचार्य गृहस्थ जीवन के महत्त्व पर उपदेश दें और दान का महत्त्व बताकर वर पक्ष तथा कन्या पक्ष दोनों से दान की घोषणा करायें और उसी समय राशि यथास्थान पहुँचाने की व्यवस्था करें ।

तदनन्तर गृहस्थाचार्य हाथ में कलश लेकर जल की धारा देता हुआ नीचे लिखा पुण्याहवाचन पढ़े ।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं । लोकोद्योतनकराः अतीतकाल-संजाताः निर्वाणादि - शान्तिपर्यन्ताः चतुर्विंशति - भूत - परमदेवाश्च वः प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम् ॥ धारा ॥ १ ॥

ॐ संप्रतिकालश्रेयस्कर - स्वर्गावतरण - जन्माभिषेकपरि - निष्क्रमण - केवलज्ञान - निर्वाणकल्याणक - विभूषित - महाभ्युदयाः श्रीवृषभादि - वर्द्धमानपर्यन्ताः वर्तमान - चतुर्विंशतिपरम – देवाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंताम् ॥ धारा ॥ २ ॥

ॐ भविष्यत् - कालाभ्युदयः प्रभवाः महापद्माद्यनन्त - वीर्य - पर्यन्ताश्चतुर्विंशति - भविष्यत्परमदेवाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंताम् ॥ धारा ॥ ३ ॥

ॐ त्रिकालवर्ति - परमधर्माभ्युदयाः सीमंधराद्यजित - वीर्यपर्यन्ताश्चेति - पञ्चविदेहक्षेत्र - विहरमाणाः विंशति - परम - देवाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंताम् ॥ धारा ॥ ४ ॥

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवाः वः प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ धारा ॥ ५ ॥

ॐ कोष्ठबीज - पादानुसारि - बुद्धि - संभिन्न - श्रोत्रप्रज्ञा - श्रमणाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ धारा ॥ ६ ॥

ॐ आमर्ष -क्ष्वेड - जल्ल - विडुत्सर्ग - सर्वौषधि - ऋद्धयश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ धारा ॥ ७ ॥

ॐ जलफल - जंघातन्तु - पुष्प - श्रेणि - पत्राग्नि - शिखा - काश - चारणाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ धारा ॥ ८ ॥

ॐ आहाररसवदक्षीण - महानसालयाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ धारा ॥ ९ ॥

ॐ उग्रदीप्त - तप्त - महाघोरानुपम - तपसश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ धारा ॥ १० ॥

ॐ मनोवाक्काय – वलिनश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ धारा ॥ ११ ॥

ॐ क्रियाविक्रिया – धारिणश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ धारा ॥ १२ ॥

ॐ मतिश्रुतावधि - मनःपर्यय - केवलज्ञानिनश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ धारा ॥ १३ ॥

ॐ अङ्गाङ्गबाह्यज्ञानदिवाकराः कुन्दकुन्दाद्यनेक दिगम्बर - देवाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ धारा ॥ १४ ॥

ॐ इह वाऽन्यनगर - ग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ताः जिनधर्म परायणाः भवन्तु ॥ धारा ॥ १५ ॥

ॐ दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु ॥ धारा ॥ १६ ॥

ॐ मातृ - पितृ - भ्रातु - पुत्र - पौत्र - कलत्र - सुहृत्स्वजन - सम्बन्धि - वधू - सहितस्य अमुकस्य + ते धनधान्यैश्वर्य - बल - बुद्धि - यशः प्रमोदोत्सवाः प्रवर्द्धन्तां ॥ धारा ॥ १७ ॥

शांतिधारा

तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु । अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । आरोग्यमस्तु । कर्मसिद्धिरस्तु ।

Scanned by CamScanner

इष्टसम्पत्तिरस्तु । काममांगल्योत्सवाः संतु । पापानि शाम्यंतु । घोराणि शाम्यंतु । पुण्यं वर्द्धतां । धर्मो वर्द्धतां । श्रीर्वर्द्धताम् । कुलं गोत्रं चाभिवर्धेताम् । स्वस्तिभद्रं चास्तु । झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा । श्रीमज्जिनेन्द्रचरणारविंदेष्वानन्दभक्तिः सदास्तु ।

इस प्रकार मङ्गलकलश से धारा छोड़ते हुए पुण्याहवाचन के हो जाने पर वर-वधू को वर के बायें तरफ करके बैठा देना चाहिए ।

गृहस्थाचार्य निम्न आशीर्वाद सूचक श्लोक पढ़कर वर के तिलक करें ।

दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु,
सद्बुद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु,
आरोग्यमस्तु विजयोऽस्तु महोस्तु पुत्र -
पौत्रोद्भवोस्तु तव सिद्धिपतिप्रसादात् ॥ १ ॥

तिलक मन्त्र

मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतमोगणी ।
मङ्गलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोस्तु मङ्गलम् ॥

हथलेवा छुड़ाना

इसके बाद हथलेवा छुड़ाने का दस्तूर कन्या का भाई अथवा कुल परम्परानुसार व्यक्ति से करावे. वर और वधू दोनों के हाथ से [विघ्नप्रणाशनविधौ इत्यादि जयमाला (पृष्ठ २६ - २७ पर मुद्रित) बोलकर] अर्घ चढ़ावे और पुष्पाञ्जलि क्षेपण करावे । तत्पश्चात् -

शांतिस्तव

जगति शांतिविवर्धनमंहसां,
प्रलयमस्तु जिनस्तवनेन मे ।
सुकृतबुद्धिरलं क्षमयायुतो,
जिनवृषो हृदये मम वर्तताम् ॥ १ ॥

चिद्रूपभावमनवद्यमिमं त्वदीयं,
ध्यायन्ति ये सदुपधिव्यतिहारमुक्तम् ।
नित्यं निरंजमनादिमनन्तरूपं,
तेषा महांसि भुवनत्रितये लसन्ति ॥ २ ॥
ध्येयस्त्वमेव भवपञ्चतयप्रसार,
निर्णाशकारणविधौ निपुणत्वयोगात् ।
आत्मप्रकाश-कृतलोकत-दन्यभाव -
पर्याय - विस्फुरणकृत्परमोऽसि योगी ॥ ३ ॥
त्वन्नाममन्त्रघनमुद्धतजन्मजात, -
दुःकर्मदावमभिशम्य शुभांकुराणि ।
व्यापादयत्यतुलभक्तिसमृद्धिभांजि,
स्वामिन्यतोऽसि शुभदः शुभकृत्वमेव ॥ ४ ॥
त्वत्पाद-तामरसकोष-निवासमास्ते,
चित्तद्विरेफसुकृति मम यावदीश ।
तावच्च संसृतिजकिल्विषतापशापः,
स्थानं मयि क्षणमपि प्रतियाति कच्चित् ॥ ५ ॥
त्वन्नाममंत्रमनिशं रसनाग्रवर्ति,
यस्यास्ति- मोहमदधूर्णननाशहेतु ।
प्रत्यूहराजिलगणोद्भवकालकूट :,
भीतिर्हि अस्य किमु संनिधिमेतिदेव ॥ ६ ॥
तस्मात्त्वमेव शरणं तरणं भवाब्धौ,
शान्तिप्रद : सकलदोषनिवारणेन ।
जागर्ति शुद्धमनसा स्मरतो यतो मे,
शान्तिः स्वयं करतले रभसाभ्युपैति ॥ ७ ॥

Scanned by CamScanner

पढ़ता हुआ गृहस्थाचार्य शांत्यर्थ जलधारा छोड़े । पश्चात् —

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः शांतिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा ॥

यह मन्त्र बोलकर वर और वधू के मस्तक पर पुष्पांजलि क्षेपण करे और इसके बाद -

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादिपरमेष्ठिनः संपूजिताः जः जः जः । अपराध - क्षमापनं भवतु ।

पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते हुए विसर्जन करे ।

सासू द्वारा आरत्या करना

वर की सासू या सुवासिनी चतुर्मुख दीपक, अक्षत, रोली, कलश आदि रखे हुए थाल को हाथ में लेकर जाया - पति का आरत्या करे और तिलक लगावे ।

गृहस्थाचार्य का आशीर्वाद

इस प्रकार आरत्या हो चुकने के पश्चात् गृहस्थाचार्य दो पुष्प-मालायें लेकर निम्नलिखित आशीर्वाद सूचक मन्त्र पढ़ता हुआ वर और वधू दोनों को एक एक पहिना देवे ।

आरोग्यमस्तु चिरमायुरथो शचीव,
शक्रस्य शीतकिरणस्य च रोहिणीव ।
मेघेश्वरस्य च सुलोचनिका यथैषा,
भूयात्तवेप्सितसुखानुभवौघदात्री ॥ १ ॥

आयुः पुष्टिं करोतु प्रहरतु दुरितं मंगलालीं घिनोतु । सौभाग्यं वृद्धिमुच्चैर्नयतु वितरताद् वैभवं संचिनोतु ॥ रामापद्माभिरामा रमयतु सुयशः स्पष्टयित्वा तनोतु । पुत्रं पौत्रं प्रतापं प्रथयतु भवतामार्हतींभक्तिरुच्चैः ॥ २ ॥

तत्पश्चात् -

सुचिरं जीवताद्देवो जयवादभिनन्दतात् ।
प्रत्यावृत्य पुनश्चास्मान्नक्षतात्माभिरक्षतात् ॥ १ ॥

यह बोलकर चारों दिशाओं में तथा ऊपर और नीचे भी पुष्प क्षेपण करे ।

इसके बाद दूल्हा और दुलहिन श्रीजिनमन्दिरजी में जाकर अपने डेरे पर जावे ।

इति विवाह विधि ।

— x —

अन्य आवश्यक विधियाँ

जैन शास्त्रों में अनेक संस्कारों का वर्णन है परन्तु वर्तमान में उनका प्रचार नहीं । इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी संस्कार कराये जाते हैं जिनका जैन सिद्धान्त से मेल नहीं खाता । इधर लोगों के सम्पर्क में आने से देखा-देखी ही कराये जाते हैं । यहाँ उन्हीं का उल्लेख किया जा रहा है जो कई जगह प्रचलित हैं ।

मोदक्रिया संस्कार (आठवाँ)

यह संस्कार गर्भ के दिन से आठवें महिने में या नवें महिने के प्रारम्भ में कराया जाता है । इसमें भी विवाह-विधि के समान हवन-कुण्ड बनाकर नित्य पूजा और पूर्व में लिखे हुए सप्त पीठिका के मन्त्रों से हवन करने के पश्चात् इस क्रिया के खास मन्त्र —

सज्जातिकल्याणभागी भव ॥ १ ॥ सद्गृहकल्याणभागी भव ॥ २ ॥ वैवाहकल्याणभागी भव ॥ ३ ॥ मुनीन्द्रकल्याणभागी भव ॥ ४ ॥ सुरेन्द्र कल्याणभागी भव ॥ ५ ॥ मंदराभिषेक कल्याणभागी भव ॥ ६ ॥ यौवराज्य - कल्याणभागी भव ॥ ७ ॥

Scanned by CamScanner

महाराज्यकल्याणभागी भव ॥ ८ ॥ परमराज्यकल्याणभागी भव ॥ ९ ॥ आर्हत्यकल्याणभागी भव ॥ १० ॥

पढ़कर आहुति देवे और पुष्पक्षेपण करे । तदनन्तर शान्ति विसर्जन करे । गर्भिणी स्त्री अपने उदर पर गन्धोदक लगावे और पति

ॐ कं ठं ह्र : प : अ सि आ उ सा गर्भार्भकं प्रमोदेन परिरक्षत स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़कर पत्नी के उदर पर गन्धोदक से लिखे और णमोकार मन्त्र पढ़कर रक्षासूत्र बाँधे ।

नाम कर्म संस्कार

यह संस्कार बालक के जन्म दिवस से दसवें या बारहवें दिन शुभ मुहूर्त में कराया जाता है । इस दिन जैन विवाह विधि में लिखित पूजा करे, सम्भव हो तो हवन भी करे । पश्चात् निम्न मन्त्र से बालक के समक्ष आहुति दे -

इत्यष्ट-सहस्त्रनामभागी भव । विजयनामाष्टसहस्त्रभागी भव । परमनामाष्टसहस्त्र भागी भव ।

पश्चात् बालक का कोई सुन्दर नाम रखना चाहिए ।

प्रथम जिन दर्शन

यह संस्कार बालक के ४० दिन के हो जाने के पश्चात् कराया जाता है । माता गाजे-बाजे के साथ बालक को लेकर जिनमन्दिर जाती है । इस दिन जिन भगवान की भक्ति भाव से पूजा करनी चाहिए और बालक के समक्ष 'ॐ नमोअर्हते भगवते जिनभास्कराय तव मुखं बालकं दर्शयामि दीर्घायुक्तं कुरु कुरु स्वाहा ।' यह मन्त्र बोलना चाहिए ।

बालक को पाट पर सुलाकर अष्ट मूल गुण उसके कान में बोलकर धारण कराना चाहिए । जब तक बालक पूर्ण समझदार न हो जावे तब तक इनके पालन कराने का उत्तरदायित्व माता पिता पर रहेगा ।

शिलान्यास विधि

भूमि की गुणवत्ता - भू भाग पर आवास बनाने सें पूर्व भूमि की गुणवत्ता के बारे में विचार करना चाहिए । शास्त्रकारों ने भूमि के लक्षणों में चार प्रकार की संज्ञा बताई है जो इस प्रकार है -

(i) ब्राह्मणी - सफेद रंग की मिट्टी वाली, कुशा सुगन्ध एवं मधुर रस युक्त भूमि ब्राह्मणी कहलाती है ।

(ii) क्षत्रिया - लाल रंग की मिट्टी वाली, शर (मूंज) युक्त, रक्त गंध एवं कसाय रस युक्त भूमि क्षत्रिया कहलाती है ।

(iii) हरे रंग की मिट्टी वाली, कुशकाश युक्त, सस्य (अन्न) गंध युक्त एवं अम्ल रस युक्त भूमि वैश्य कहलाती है ।

(iv) काले रंग की मिट्टी वाली, सब प्रकार के घास से युक्त, मद्य गंध एवं कटु रस युक्त भूमि शुद्रा कहलाती है ।

इनमे ब्राह्मणी भूमि सुखदा, क्षत्रिया राज्यप्रदा, वैश्या-धन धान्य प्रदात्री और शुद्रा भूमि त्यागने योग्य होती है ।

भूमि चयन - भूमि का चयन भवन निर्माण विधि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि योग्य भूमि पर निर्मित भवन ही दीर्घकाल तक स्थित रह कर कल्याण का साधन बन सकता है ।

जहाँ भवन निर्माण करना हो वह भूमि शुद्ध हो, रम्य, स्निग्ध एवं सुगन्ध वाली हो, पोली न हो, वहाँ कीड़ों मकोड़ों का निवास न हो, शमशान भूमि न हो, तथा अपने वर्ण सदृश गन्ध वाली एवं सुस्वाद युक्त हो, ऐसी भूमि ग्रहण करनी चाहिए ।

भूमि लक्षण एवं जल प्रवाह का फल -

(i) दक्षिण, पश्चिम, नैऋत्य एवं वायव्य में ऊंची भूमि को गज पृष्ठ भूमि कहते हैं । इस पर निवास करने से लक्ष्मी लाभ और आयु वृद्धि होती है ।

(ii) चारों ओर नीची तथा बीच में ऊँची भूमि को कूर्मपृष्ठ भूमि कहते हैं । इस पर निवास करने से प्रतिदिन उत्साह, सुख और धन धान्य की विपुल वृद्धि होती है ।

Scanned by CamScanner

(iii) पूर्व , आग्नेय और ईशान दिशा में ऊंची तथा पश्चिम में नीची भूमि को दैत्य पृष्ठ भूमि कहते हैं इससे धन, जन एवं सुखशान्ति की हानि होती है ।

(iv) पूर्व - पश्चिम दिशा में लम्बी, उत्तर, दक्षिण में ऊँची, और बीच में नीची भूमि को नाग पृष्ठ भूमि कहते हैं । इस पर निवास करने से उद्वेग, मृत्युभय, स्त्री पुत्रादि की हानि और शत्रु वृद्धि होती है ।

दिशागत भूमि की निम्नता और जल के बहाव का फल

क्र. स	दिशाएं व विदिशाएं	भूमि की निम्नता	फल	जल बहाव का फल
१	पूर्व में	नीची भूमि	गुणकारी, आयु बलादि वृद्धि, राज्य सम्मान	अत्यन्त लाभप्रद
२	आग्नेय में	नीची भूमि	अग्नि भय, शत्रु संताप, नित्यक्लेश	अग्नि भय
३	दक्षिण में	नीची भूमि	गृह और धन हानि तथा रोग वृद्धि	मृत्यु
४	नैऋत्य में	नीची भूमि	क्लेश, रोग, धन नाश, मृत्युप्रदा,	चोर भय
५	पश्चिम में	नीची भूमि	धन धान्य विनाश, शोक व दाह	शोक, परिताप
६	वायव्य में	नीची भूमि	कुल नाश, स्त्री नाश, शत्रु वृद्धि भय व दुःख	अन्न नाश
७	उत्तर में	नीची भूमि	पुत्र, धन, भोग, व्यापार, सुखादि की वृद्धि	अत्यन्त लाभप्रद
८	ईशान में	नीची भूमि	सुख, सौभाग्य, धन एवं धर्म वृद्धि	अत्यन्त लाभप्रद

भूमि परीक्षा -

(i) जहाँ मकान बनाना है उस भूमि में सर्व प्रथम स्वस्तिक बनाकर एक हाथ लम्बा चौड़ा गड्ढा खोदकर भूमि परीक्षण करे । गड्ढे में खुदी हुई मिट्टी वापस भरे । यदि मिट्टी कम रहे तो अशुभ, सम रहे तो मध्यम मिट्टी गड्ढे से अधिक रहे तो भूमि उत्तम जानना ।

(ii) उसी एक हाथ लम्बे चौड़े गड्ढे को जल से परिपूर्ण भरकर सौ कदम जाकर लौट आवे और देखे - यदि तीन अंगुल जल सूख जावे अर्थात् कम हो जावे तो भूमि अधम, दो अंगुल जल सूखे तो मध्यम और यदि एक ही अंगुल जल सूखे तो भूमि उत्तम जाने ।

भवन निर्माण कराने वाले को चाहिये कि वह मुहूर्तानुसार निर्दिष्ट दिशा में नींव का गड्ढा खुदावे ।

खात-निर्णय -

विवाहे	देवालये	गृहारंभे	जलाशये	दिशायां	खातम
२, ३, ४	१२, १, २	५, ६, ७	१०, ११, १२	अग्नि कोणे	खातम्
११,१२, १	९, १०, ११	२, ३, ४	७, ८, ९	नैऋक्त कोणे	खातम्
८, ९, १०	६, ७, ८	११, १२, १	४, ५, ६	वायव्य कोणे	खातम्
५, ६, ७	३, ४, ५	८, ९, १०	१, २, ३	ईशान कोणे	खातम्

(i) सूर्य का प्रवेश जब सिंह, कन्या व तुला राशि में हो तो अग्नि कोण में,

(ii) सूर्य का प्रवेश जब वृश्चिक, धनु व मकर राशि में हो तो ईशान कोण में,

Scanned by CamScanner

(iii) सूर्य का प्रवेश जब कुंभ, मीन व मेष राशि में हो तो वायव्य कोण में तथा

(iv) सूर्य का प्रवेश वृष, मिथुन व कर्क राशि में हो तो नैऋत्य कोण में खात भरना चाहिए अर्थात् शिलान्यास का मुहूर्त करना चाहिये। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक तीन माह पश्चात् नींव के गर्त का स्थान बदलता रहता है ।

शिलान्यास विधि

जहाँ नींव का गड्ढा खुदा हो वहीं शुभ मुहूर्त में शिलान्यास मुहूर्त करना चाहिए । इस समय एक चौकी पर सिंहासन लगाकर उस पर विनायक यंत्र विराजमान करे । तत्पश्चात् नित्य नियम पूजन पूर्वक नव देव पूजन तथा विनायक यंत्र पूजन करे तथा निम्न प्रकार से वास्तु पूजन करावें -

दिग्बन्धन

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं, ह्रां पूर्वदिशातः समागत विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

(प्रत्येक मन्त्र पढ़ने के पश्चात् पीली सरसों या पुष्प छोड़ें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ह्रीं दक्षिणदिशातः समागत विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं, ह्रूं पश्चिमदिशातः समागत विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ह्रौं उत्तरदिशातः समागत विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं, ह्रः सर्वदिशातः समागत विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

(सब दिशाओं में पीली सरसों या पुष्प फेंकें)

भूमिशुद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा पञ्च परमेष्ठिभ्यो नमः क्ष्वीं भूः अमृतजलेन खन्ति (खान) शुद्धि करोमि ।

(यह पढ़कर गेंती पर जल के छींटे देवें)

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः खन्ति चन्दनलेपं करोमि ।

(यह पढ़कर गेंती पर चन्दन से साथिया बनावे इसके पश्चात् नित्यमह नवदेव और विनायक यन्त्र का पूजन करें)

वास्तुविधान

एते वास्तुसुराः समस्तधरणीसंवाहिनी वाहिताः
प्रत्यूहाद्यविधायिनस्त्वपचिताः प्रत्यूहसंहारकाः ।
आद्याः प्रापितपूजनाः प्रमुदिताः सर्वप्रभाभान्विता -
यष्टुर्याजकभूपमन्त्रिसुजनानां च श्रियै सन्तु ते ॥ १ ॥
पृथ्वीविकारात् सलिलप्रवेशात्
अग्नेर्विदाहात् पवन प्रकोपात् ।
चौरप्रयोगादपि वास्तुदेवाः
चैत्यालयं रक्षतु वास्तुदेवः ॥ २ ॥

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

ॐ ह्रीं सर्वशान्ति कुरुत कुरुत स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानर्द्धिभ्यो नमः स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयर्द्धिभ्यो नमः स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं दशदिशातः आगतविघ्नान् निवारय निवारय सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं दुर्महूर्तदुः शकुनादिकृतोपद्रव शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ५ ॥

Scanned by CamScanner

ॐ ह्रीं वास्तुदेवेभ्य: स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं परकृतमन्त्रतन्त्रडाकिनीशाकिनीभूतपिशाचादिकृतोपद्रव शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोपशान्ति कुरुत कुरुत स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं सर्वाधि व्याधि शान्ति कुरुत कुरुत स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं सर्वत्र क्षेमं आरोग्यतां विस्तारय विस्तारय सर्व हृष्ट-पुष्टं प्रसन्नचित्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं यजमानादीनां सर्वसङ्घस्य शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि समृद्धि अक्षीणर्द्धि पुत्रपौत्रादिवृद्धि आयुर्वृद्धि धन धान्य समृद्धि धर्मवृद्धि कुरुत कुरुत स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः णमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ भूर्भुव: स्व: नम: स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं आं अनुत्पन्नानां द्रव्याणामुत्पादकाय, उत्पन्नानां द्रव्याणां वृद्धिकराय चिन्तामणिपार्श्वनाथाय वसुदाय नम: स्वाहा ॥ १४ ॥

(अर्घ चढ़ावे)

(नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर खन्ति में पीली सरसों अथवा पुष्प छोड़े)

ॐ ह्रीं क्रौं इन्द्र - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं अग्नि - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं यम- वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं नैऋत्य- वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं वरुण - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं पवन - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं कुबेर - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं कुबेर - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं ऐशान - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं आर्य - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं विवस्वान् - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं क्रौं मित्र - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ११ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं भूधर - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ १२ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं शचीन्द्र - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ १३ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं प्राचीन्द्र - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ १४ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं इन्द्र - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ १५ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं इन्द्रराज - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ १६ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं रुद्र - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ १७ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं रुन्द्र - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ १८ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं आप - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ १९ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं आपवत्स - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ २० ॥
ॐ ह्रीं क्रौं पर्जन्य - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ २१ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं जयन्त - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ २२ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं भास्कर - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ २३ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं सत्य - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ २४ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं भृश - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ २५ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं अन्तरीक्ष - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ २६ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं पुष्प - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ २७ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं वितथ - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ २८ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं राक्षस - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ २९ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं गन्धर्व - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ३० ॥

Scanned by CamScanner

ॐ ह्रीं क्रौं भृङ्गराज - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ३१ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं मृषदेव - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ३२ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं दौवारिक - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ३३ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं सुग्रीव - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ३४ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं पुष्पदन्त - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ३५ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं असुर - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ३६ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं शोष - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ३७ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं रोग - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ३८ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं नागराज - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ३९ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं मुख्य - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ४० ॥
ॐ ह्रीं क्रौं भल्लारक - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ४१ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं भृङ्ग - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ४२ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं आदित्य - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ४३ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं उदित - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ४४ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं विचारदेव - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ४५ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं पूतना - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ४६ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं पापराक्षसी - वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ४७ ॥
ॐ ह्रीं क्रौं चरकी वास्तुदेवाय स्वाहा ॥ ४८ ॥

तिर्यक्प्रचारा दशनेः प्रपापात् बीजप्ररोहाद् द्रुमखण्डतापात्
कीटप्रवेशादपि वास्तुदेवायः चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालम् ॥

(इतीष्टप्रार्थनाय पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

इस प्रकार वास्तु पूजा करके गृहस्थाचार्य मंगलाष्टक पढ़तें हुए नींव के गर्त में पुष्प क्षेपण करे । पश्चात् यजमान के हाथ से कारीगर के तिलक करावे, माला पहनावे एवं १ $\frac{१}{४}$ किलो गुड़, श्री फल एवं नगद

रुपये देकर कारीगर का सम्मान करावे । करणी व हथौड़े के भी तिलक करावे एवं मौली बांधे । इसके बाद कारीगर एवं यजमान नींव के गड्ढे में जहाँ मुहूर्त सम्पन्न करना है उतरे एवं –

चतुर्णिकायामर संघएस, आगत्य यज्ञे विधिना नियोगम् ।
स्वीकृत्य भक्त्या हि यथाहिदेशे, सुस्था भवन्त्वान्हिक कल्पनायाम् ।

यह पढ़ कर पुष्प छोड़े । तत्पश्चात्

ॐ हूं फट् किरीटिं किरीटिं घातय घातय, परविघ्नान् स्फोटय - २ सहस्त्र खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्दभिन्द क्षां क्षं वः फट् स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़कर नींव गर्त के दशों दिशाओं में पुष्प अथवा पीली सरसों फेंके । पश्चात्

ॐ ह्रीं वायुकुमाराय सर्व विघ्न विनाशनाय मही पूतां कुरु कुरु फट् स्वाहा ।

(यह पढ़कर दर्भपूल से भूमि का मार्जन करे ।)

ॐ ह्रीं मेघ कुमाराय धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं यः सः क्षः फट् स्वाहा ।

(यह पढ़कर दर्भपूल में जल लेकर भूमि को सींचे ।)

ॐ ह्रीं अग्नि कुमाराय भूमिं ज्वलय ज्वलय अं हं सं पं झं ठं यः क्षः फट् स्वाहा ।

(यह पढ़कर कपूर जलाकर भूमि को संतप्त करे)

ॐ ह्रीं क्रौं सष्ठि सहस्त्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा ।

(यह पढ़कर भूमि को जल से सींचें)

अथ सिद्धार्थसत्पुञ्जान क्षिपेदिष्टार्थ सिद्धये ।
आग्नेयादि कोणेषु वेदिकाया विदध्यहे ।

यह पढ़कर आठों दिशाओं में पीली सरसों या पुष्प के पुञ्ज रखे ।

Scanned by CamScanner

बाणैश्चतुर्भिनिक्षितैर्जयाय, सिद्धार्थपुंजैश्च निजेष्टसिद्धयै ।
सन्तान वृद्ध्यै च यवारकै श्री वेद्याश्च कोणान् परिभूषयामि ।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा ।

(यह पढ़कर चारों कोणों में पाँच अंगुल प्रमाण लोहे की शलाकाएं गाड देवें । इन शलाकाओं को तेल में भिगोकर रुई में लपेटकर गाडें ।)

अतितीक्ष्ण चतुर्बाणान् भव्यानां जललब्धये ।
आग्नेयादि कोणेषु वेदिका यां विदद्महे ।
ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्वीं भूः रक्ष रक्ष स्वाहा ।

(यह पढ़कर गाड़ी हुई कीलों पर मौलि तीन बार लपेटे)

तत्पश्चात् यजमान के हाथ से करणी द्वारा पांच बार सीमेंट, बजरी का मिश्रित मसाला डलवायें । तत्पश्चात्

ॐ भगवते श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सेविताय अट्ढे मुट्ट शुद्ध विटठेघभूत भविष्यत वर्तमानाय स्वाहा ।

(यह मन्त्र पढ़कर बीच में सोने की एक कील गाडें)

इसके बाद महर्षिपर्यूपाषन का पाठ बोले और एक ताम्रकलश जिस पर केसर से साथिया लिखा हो लेकर उसमें सर्वौसधि, पञ्चरत्न, पीली सरसों, हल्दी, सुपारी आदि द्रव्य, प्रचलित सिक्के, चांदी का सवा रुपया अथवा शक्त्यनुसार द्रव्य भरकर तथा पारा डालकर तैयार करे और सीमेंट मिश्रित मसाले पर जहाँ सोने की कील गाड़ी है वहाँ चाँदी का स्वास्तिक रखे और उसपर मातृ का यंत्र रखकर तथा ताम्रपत्र पर निम्न प्रशस्ति खुदवाकर रखदे ।

(प्रशस्ति) — **ॐ कुन्दकुन्दाम्नाये मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे ..... वर्षे ..... मासे ..... पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... ग्रामें ..... श्रेष्ठिभिः निजभवनस्य नीव्रपूरणं क्रियते । स्वस्ति भवतु ।** तत्पश्चात् मातृका यंत्र पर

तीर्थाम्बुपूर्णशरणोत्तममङ्गलार्थं
संकल्पनादि समलंकृत शुभ्रकुम्भान् ।
वेद्यष्टदिक्षु विनिवेश्य सपञ्चवर्ण -
सूत्रेण तांस्त्रिगुणमेव वृणोमि सिद्ध्यै ॥

ॐ ह्री कलशस्थापनं करोमि ।

दिव्य - प्रदीप - कलिकोज्ज्वल - वर्ण - पूरै -
नीराजनार्थमुदितैर्वरभाजनस्यैः ।
नीराजयामि भगवज्जिनयज्ञवेदी
मोजोगुणस्य यजतामभिवर्धनाय ॥

(यह पढ़कर कलशों पर जलता हुआ दीपक रखें)

इसके बाद -

पाषाण की पाँच चोकोर शिलायें बनवाकर उन्हें गन्धोदक से प्रक्षालितकर मौलि से वेष्टित करे तथा उन पर **ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ये पाँच** बीजाक्षर केसर से क्रम से एक एक पर लिखें और

शिलां विशालां लवणेण विद्धां,
सूत्रेण बद्धां समृदं सलोष्ठाम् ।
भौगौघपुष्ट्यै दुरितौघपिष्ट्यै,
वेद्याः अधस्ताद् विनिवेशयामि ॥

ॐ ह्रीं सर्वजनानन्दकारिणी सौभाग्यवति तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

(यह पढ़कर मध्य में ह्रां बीजाक्षर वाली और फिर पूर्वादि चारों दिशाओं में ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः बीजाक्षर वाली शिलाएं रखे)

इसके बाद यजमान नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप्य करें और नींव गर्त से ऊपर आकर पूजा के स्थान पर बैठे । इसके बाद गृहस्थाचार्य पूण्याहवाचन कराके शान्ति पाठ एवं विर्सजन करावे तथा आरत्या आदि लौकिक शिष्टाचार पूरा करके कार्य सम्पन्न करे ।

Scanned by CamScanner

जो घर पुरुष के अंगों के सदृश प्रमाणयुक्त होता है वह शुभप्रद होता है । किन्तु जिस घर के अंग न्यून या अधिक होते हैं वह शुभप्रद और ऋद्धि सिद्धि कारक नहीं होता ।

घर और दुकान कैसे बनाने चाहिए -

पीछे चौड़ा, टेड़ा मेढ़ा, तथा कोने वाला सूर्पाकार गृह अशुभ होता है । इसे बनाने वाला अशुभ गति को प्राप्त करता है और गृह स्वामी निर्धन होता है ।

सूर्पाकार गृह करें किन्तु बाँका चूंका और कोने वाला न करें । यदि आगे का भाग चौड़ा हो तो शुभ है किन्तु पीछे का भाग चौड़ा शुभ नहीं होता ।

दुकान के आगे का भाग ऊँचा और सिंह सदृश चौड़ा तथा मध्य में समान होना शुभ है ।

विशेष जानकारी के लिये वास्तुशास्त्र का अध्ययन करें अथवा वास्तुकार से सम्पर्क करें ।

गृह निर्माण पूरा हो जाने के बाद नवीन गृह प्रवेश का मुहूर्त चक्र सामान्य ज्ञान के लिये यहाँ दिया जा रहा है, इसका लाभ उठाया जा सकता है —

नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त

नक्षत्र —	उत्तरा भाद्रपद, उषा, उफा, रोहिणी, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा, रेवती
वार -	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनि वार
तिथि -	२ / ३ / ५ / ६ / ७ / १० / ११ / १२ / १३
लग्न —	२ / ५ / ८ / ११ उत्तम ३ / ६ / ९ / १२ मध्यम

इसी प्रकार जीर्ण गृह प्रवेश का भी विचार करना चाहिए —

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त

नक्षत्र —	शतभिषा , पुष्य, स्वाति, धनि., चित्रा, अनु., मृग., रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी
वार —	चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि वार
तिथि —	२ / ३ / ५ / ७ / १० / ११ / १२ / १३
मास —	कार्तिक, मार्गशीर्ष, श्रावण, माघ, फाल्गुन, बैसाख, ज्येष्ठ

नवगृह प्रवेश विधि

गृह प्रवेश भी वास्तुशास्त्र का महत्वपूर्ण प्रकरण होने के फलस्वरुप अब इस की विधि का उल्लेख किया जाता है । गृह प्रवेश भवन या गृह निर्माण के पश्चात् शुभ समय का निर्धारण करते हुए उसमें निवास करना आरम्भ किया जाता है । अत: किसी विद्वान् से गृह प्रवेश का शुभ मुहूर्त निकलवाना चाहिए । पश्चात् गृह प्रवेश के पूर्व दिन कम से कम ११ हजार शान्ति मन्त्र का जाप्य एवं शान्ति विधान की पूजा कराना चाहिए तथा रात्रि में महामन्त्र नवकार का जाप्य करना चाहिए । इसके लिये गृहस्थाचार्य को चाहिये कि वह नवनिर्मित भवन में योग्य स्थान देखकर उत्तम वेदी की रचना करे या बनी बनाई किसी मन्दिर से मंगा ले और उस पर यन्त्र, शास्त्र व कलश स्थापन करे । पश्चात् सकलीकरण पूर्वक जाप्य एवं शान्ति विधान की पूजा करावे तथा दूसरे दिन अर्थात् गृह प्रवेश के मुहूर्त के दिन नवदेव, विनायक यन्त्र व सिद्ध पूजा करके शिलान्यास विधि में दिये गये मन्त्रों से वास्तु पूजन सम्पन्न करे । इसके बाद हवन करके शुभ मुहूर्त के समय गृह स्वामी व स्वामिनी दोनों मंगल गीतों व वादित्रों के साथ मांगलिक द्रव्यों एवं जल से परिपूर्ण कलश में जल लावें । स्त्री के सिर पर कलश और पुरुष के हाथ में प्रकाश का द्योतक

Scanned by CamScanner

दीपक व अन्य मांगलिक द्रव्य एवं ऋतुफल रहे । गृहस्थाचार्य गृह प्रवेश के अवसर पर मंगल पाठ पढ़कर पति पत्नी पर पुष्प क्षेपण करे और द्वार के दोनों ओर केसर से स्वास्तिक तथा द्वार के ऊपरी भाग पर ॐ ह्रीं अर्हं नमः लिखे । तत्पश्चात् निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए गृहस्थाचार्य नवगृह में प्रवेश करावे —

"सर्वाणि मङ्गलानि, श्रियः, समृद्धयश्च अत्र अवतरंतु, सर्वे अन्तरायाः शाकिनी डाकिनी भूत पिशाचाश्च क्षिप्रं द्रवन्तु ।"

तत्पश्चात् जलपूर्ण घट को व गुड़ रसोई घर में और दीपक तथा अन्य मंगलद्रव्यों व ऋतुफलों को सोने व उठने बैठने के सभी कमरों में उच्च स्थान पर रखवा दे ।

इसके बाद गृहस्थाचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करता हुआ समस्त नवीन भवन में पुष्प क्षेपण करे -

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वराः ।

इसके बाद मंगलकलश का जल प्रत्येक कमरे के उच्च स्थानों पर छिड़कावे एवं लोहे की चार कीलें चारों विदिशाओं में गड़वावे तथा समस्त भवन को मोली से वेष्टित करे और पत्तों की बांदरवाल से सुशोभित करावे । इस प्रकार सम्पूर्ण विधि को पूरा करके गृह स्वामी चतुर्विध दान देकर विधि को सम्पन्न करे तथा अन्त में अन्य सामाजिक रस्में (पहनना, ओढ़ना, लेनदेन आदि) पूरी करें ।

दुकान या कारखाने का मुहूर्त एवं दीपावली पूजन

दुकान व कारखाने के मालिक द्वारा निम्न प्रकार पूजा प्रारंभ करनी चाहिए । पृष्ठ १४ - १५ पर छपे ॐ जय जय आदि पाठ के पश्चात् देवशास्त्र गुरु की समुच्चय पूजा, नवदेव पूजा व विनायक यन्त्र पूजा करके निम्नलिखित पूजायें करे -

सरस्वती पूजा

दोहा - **जनम जरा मृत्यु छय करै, हरै कुनय जड़रीति ।**
भवसागर सों ले तिरे, पूजै जिनवचप्रीति ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती वाग्वादिनि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् ।

क्षीरोदधि गङ्गा, विमल तरंगा, सलिल अभङ्गा, सुखसङ्गा ।
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी हित चंगा ॥
तीर्थङ्कर की धुनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी, पूज्यभई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

करपूर मँगाया, चन्दन आया, केशर लाया, रङ्ग भरी ।
शारद पद वन्दौं, मन अभिनन्दौं, पापनिकंदौं, दाहहरी ॥ ती. ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुखदास कमोदं, धारकमोदं, अति अनुमोदं चन्दसमं ।
बहुभक्तिबढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं ॥ ती. ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

बहु फूलसुवासं, विमलप्रकाशं, आनंदरासं, लाय धरे ।
ममकाम मिटायौ, शील बढ़ायौ, सुख उपजायौ, दोष हरे ॥ ती. ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

पकवान बनाया, बहुघृत लाया, सब विधि भाया, मिष्ट महा ।
पूजूँ थुति गाऊं प्रीति बढ़ाऊं, क्षुधा नसाऊं हर्ष लहा ॥ ती. ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

करि दीपकज्योतं, तमछयहोतं, ज्योति उद्योतं, तुमहि चढ़ै ।

Scanned by CamScanner

तुमहो परकाशक, भरमविनाशक, हमधटभासक, ज्ञान बढ़ै । ती. ।
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
शुभगंध दशोंकर, पावक में धर, धूप मनोहर खेवत हैं ।
सब पाप जलावै, पुण्य कमावै, दास कहावै सेवत हैं ॥ ती. ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
बादाम छुहारी, लौंग सुपारी, श्रीफल भारी, ल्यावत हैं ।
मनवांछित दाता, मेट असाता, तुम गुन माता, ध्यावत हैं ॥ ती. ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
नयननिसुखकारी, मृदुगुनधारी, उज्ज्वल भारी, मोल धरै ।
शुभगंध सम्हारा, वसन निहारा, तुमतन धारा, ज्ञान करे ॥ ती. ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा ।
जल चंदन अच्छत, फूल चरु चत, दीप, धूप अति फल लावै ।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै ॥ ती. ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
सोरठा – ओंकार ध्वनि सार, द्वादशाङ्ग वाणी विमल ।
नमो भक्ति उरधार, ज्ञान करै जड़ता हरै ॥
पहला आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो ।
दूजा सूत्रकृतं अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरुभाषं ॥ १ ॥
तीजा ठाना अंग सुजानं, सहस बियालिस पद सरधानं ।
चौथा समवायांग निहारं, चौसठ सहस लाख इकधारं ॥ २ ॥
पंचम व्याख्याप्रज्ञप्ति दरशं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं ।
छट्टा ज्ञातृकथा विस्तारं, पाँच लाख छप्पन हज्जारं ॥ ३ ॥
सप्तम उपासकाध्ययनांगं, सत्तर सहस ग्यारह लाख भंगं ।
अष्टम अन्तकृतं दस ईसं, सहस अठाइस लाख तेईसं ॥ ४ ॥

नवम अनुत्तरदश सुविशालं लाख बानवै सहस चवालं ।
दशम प्रश्न व्याकरण बिचारं, लाखतिरानव सोल हजारं ॥ ५ ॥
ग्यारम सूत्रविपाक सु भाखं, एक क्रोड़ चौरासी लाखं ।
चार कोड़ि अरु पन्द्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरुशाखं ॥ ६ ॥
द्वादश दृष्टिवाद पन भेदं, इक सौ आठ कौड़िपद वेदं ।
अड़सठ लाख सहस छप्पन है, सहित पंचपद मिथ्याहन है ॥ ७ ॥
इक सौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो ।
ठावन सहस पञ्च अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने ॥ ८ ॥
कौड़ि इकावन आठहिं लाखं, सहस चुरासी छहसो भाख ।
साढ़े इक्कीस श्लोक बताये, एक एक पद के ये गाये ॥ ९ ॥
घत्ता - जा वानी के ज्ञान तें, सूझै लोक अलोक ।
'द्यानत' जग जयवन्त हो, सदा देत हों धोक ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

श्री वर्द्धमान जिन पूजा

मत्तगयन्द

श्रीमत वीर हरै भव पीर, भरै सुख सीर अनाकुलताई ।
केहरि अङ्क अरीकरदंक नये हरि पंकति मौलि सुआई ॥
मैं तुमको इत थापतु हौं, प्रभु भक्ति समेत हिये हरषाई ।
हे करुणाधनधारक देव ! इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ॥
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

छन्द अष्टपदी

क्षीरोदधि सम शुचि नीर, कञ्चन भृङ्ग भरो ।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करौं ॥

Scanned by CamScanner

श्रीवीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो ।
जय वर्द्धमान गुण धीर, सन्मति दायक हो ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयागिरि चन्दन सार, केसर संग घसों ।
प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसों । श्री वीर. ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुल सित शशि सम शुद्ध, लीनो थार भरी ।
तसु पुञ्ज धरों अविरुद्ध, पावों शिव नगरी । श्री वीर. ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरतरु के सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे ।
सो मनमथ- भञ्जन हेत, पूजों पद थारे । श्री वीर. ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

रस रज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी ।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी । श्री वीर. ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तम खंडित मंडित- नेह, दीपक जोवत हों ।
तुम पदतर हे सुख गेह, भ्रमतम खोवत हों । श्री वीर. ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिचन्दन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा ।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा । श्री वीर. ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऋतुफल कलवर्जित लाय, कञ्चन थार भरों ।
शिवफल हित हे जिनराय, तुम ढिग भेंट धरों । श्री वीर. ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों ।
गुण गाऊं भवदधि तार, पूजत पाप हरों । श्री वीर. ।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक

मोहि राखो हो शरणा, श्री वर्धमान जिनरायजी । मोहि. ।
गरभ षाढ़ सित छट्ठ लियो तिथि, त्रिशलाउर अघहरना ॥
सुर सुरपति तित सेवकरी नित, मैं पूजौं भवतरना । मोहि. ।

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लाषष्ठ्यां गर्भावतरण मंगलप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कनवरना ।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भव हरना । मोहि. ।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना ।
नृपति कूल घर पारण कीनो, मैं पूजों तुम चरना । मोहि. ।

Scanned by CamScanner

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

शुकल दशै वैशाख दिवस अरि, घाति चतुक क्षय करना ।
केवल लहि भवि भवसर तारे, जजों चरन सुख भरना । मोहि. ।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

कार्तिक श्याम अमावस शिव तिय पावापुरतैं वरना ।
गणफणिवृन्द जजै तित बहुविधि, मैं पूजों भव हरना । मोहि. ।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जयमाला (छन्द हरिगीता)

गणधर, असनिधर, चक्रधर, हरधर गटाधर वरवदा ।
अरु चापधर विद्यासुधर, त्रिशूलधर सेवहि सदा ॥
दुख हरन आनन्द - भरन तारन तरन चरन रसाल है ।
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत भाल की जयमाल है ॥ १ ॥

छन्द घत्ता

जय त्रिशलानन्दन हरिकृतवन्दन जगदानन्दन चन्दवरं ।
भवतापनिकन्दन तनमनकन्दन रहित सपन्दन नयनधरं ॥ २ ॥

छन्द त्रोटक

जय केवलभानु कला सदनं, भवि कोक विकासन कञ्जवनं ।
जगजीत महारिपु मोह हरं, रजज्ञान दृगांवर चूर करं ॥ १ ॥
गर्भादिक मंगल मण्डित हो, दुख दारिद को नित खंडित हो ।
जगमांहि तुम्हीं सत पंडित हो, तुमही भव भावविंहडित हो ॥ २ ॥
हरिवंश सरोजनको रवि हो, बलवन्तमहन्त तुमही कवि हो ।
लहि केवल धर्म प्रकाश कियो, अबलौं सोई मारग राजति यों ॥३॥

पुनि आप तने गुनमाहिं सही, सुरमग्न रहे जितने सबही ।
तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननि सों मन भावत हैं ॥ ४ ॥
पुनि नाचत रङ्ग उमङ्ग भरी, तव भक्ति विषै पग एम धरी ।
झननं झननं झननं झननं, सुरलेत तहाँ तननं तननं ॥ ५ ॥
घननं घननं घन घण्ट वजे, द्दम द्दम द्दम द्दम मिरदङ्ग सजै ।
गगनांगन-गर्भगता सुगता, ततता ततता अतता वितता ॥ ६ ॥
धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसाल जु छाजत है ।
सननं सननं सननं नभ में, इकरूप अनेक जु धारि भ्रमैं ॥ ७ ॥
केइ नारि सुवीन बजावति हैं, तुमरो जस उज्जवल गावति हैं ।
करताल विषैं करताल धरैं, सुरताल विशाल जु नाद करैं ॥ ८ ॥
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करै प्रभुजी तुमरी ।
तुमही जगजीवन के पितु हो, तुमही विन कारनतैं हितु हो ॥ ९ ॥
तुमही सब विघ्न विनाशक हो, तुमही निज आनन्द भासक हो ।
तुमही चित चिंतितदायक हो, जगमाहिं तुमही सब लायक हो ॥१०॥
तुमरे पन मङ्गल माहिं सही, जिय उत्तम पुण्य लियो सबही ॥
हमको तुमरी शरणागत है, तुमरे गुनमें मन पागत हैं ॥ ११ ॥
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जबलौं वसु कर्म नहीं नसिये ॥
तबलौं तुम ध्यान हिये वरतों, तबलों श्रुतचिंतन चित्तरतो ॥ १२ ॥
तबलों व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभ भाव सुगाहतु हों ।
तबलों सत संगति नित्त रहो, तबलों मम संयम चित्तगहो ॥ १३ ॥
जबलों नहिं नाश करौं अरिको, शिवनारि वरौं समताधरिको ।
यह द्यो तबलों हम को जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ॥ १४ ॥

घत्ता – श्री वीर जिनेशा, नमतसुरेशा, नागनरेशा, भगति भरा ।
'वृन्दावन' ध्यावै, विघन नशावै, वांछित पावै शर्मवरा ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं महावीर जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

Scanned by CamScanner

दोहा – श्रीसन्मति के जुगलपद, जो पूजै धरि प्रीत ।
"वृन्दावन" सो चतुर नर, लहै मुक्ति नवनीत ॥

इत्याशीर्वादः ।

सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी । तुममें जितने गुन हैं तितनी ।
कहि कौन सकै मुखसों सबही । तिहिं पूजतहों गहि अर्घ यही ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि वीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कवित्त

ऋषभ देवको आदि अन्त, श्रीवर्द्धमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरण कमलको पूजै, जो प्राणी गुणमाल उचार ।
ताके पुत्रमित्र धन जोवन, सुख समाज गुन मिलै अपार ।
सुरपदभोग भोगि चक्री ह्वै, अनुक्रम लहै मोक्षपद सार ॥ २ ॥

इत्याशीर्वादः ।

पश्चात् गृहस्थाचार्य प्रमुख वही या रजिस्टर में प्रारम्भ के दो पृष्ठ छोड़ कर तीसरे पृष्ठ में केसर या रोली से साथिया बनाये और उसके नीचे निम्नांकित मङ्गल सूचक वाक्य लिखे –

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन-धर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥

श्री
श्री श्री
श्री लाभ श्री श्री श्री श्री शुभ
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री

श्री वृषभाय नमः, श्री महावीराय नमः, श्री गौतम गणधराय नमः, श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै नमः, श्रीजिन केवलज्ञान लक्ष्मी देव्यै नमः श्री शुभ मिती ..... सम्वत् ..... वीरनिर्वाण सम्वत् ..... तदनुसार ..... वार दिनांक ..... सन् ..... ई को ..... बजे शुभ लग्न एवं मुहूर्त में फर्म ..... का शुभारम्भ मुहूर्त जैन विधि विधानानुसार सम्पन्न हुआ ।

इसके बाद पान पर ॐ या साथिया लिखकर बही में रखे और हल्दी व सुपारी तथा फल रखे और पुष्प क्षेपण करे ! पश्चात् विवाह विधि में दिया गया पुण्याहवाचन पढ़े । पश्चात् मङ्गलाष्टक पढ़कर पुष्प क्षेपण करे और शान्ति विर्सजन करके मुहूर्त सम्पन्न करे । पश्चात् निम्नलिखित जिनवाणी की आरती करे ।

॥ जिनवाणी माता की आरती ॥

जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी ।
तुमको निश दिन ध्यावत सुरनर मुनि ज्ञानी ॥ टेर ॥
श्री जिन गिरतें निकसी, गुरु गौतम वाणी ।
जीवन भ्रम तम नाशन दीपक दरशाणी ॥ जय. ॥ १ ॥
कुमति कुचालक चरण, वज्र सु सरधानी ।
नव नियोग निक्षेपण दरशाणी ॥ जय. ॥ २ ॥
पातक पङ्क पखालन, पुण्य ही पावे पाणी ।
मोहमहार्णव डूबत, तारण नौकाणी ॥ जय. ॥ ३ ॥
लोकालोक निहारण, दिव्य नेत्र स्थानी ।
निज पर भेद दिखावन, सूरज किरणानी ॥ जय. ॥ ४ ॥
श्रावक मुनिगण जननी, तुमही गुणखानी ।
सेवक लख शुभदायक, पावन परमाणी ॥ जय. ॥ ५ ॥

इस अवसर पर दुकान के मालिक को यथाशक्ति दान देना चाहिये ।

* * *

Scanned by CamScanner

जैन संस्कार विधि योग्य सामग्री

वैवाहिक सामग्री

मन्दिर से प्राप्त करने योग्य उपकरण :—

चांदी के बांस ४, चन्दवा १, हवन कुण्ड १, वेदी १, सिंहासन १, छत्र १, अष्ट मंगल द्रव्य ८, शास्त्र १, चौकी ४, चंवर २, पाटे २, थाली ३, ठोणा १, छोटी रकाबी ७, छोटे कलश ७, छोटी प्याली १, प्याला १ ।

पूजन सामग्री :— चांवल १ किलो, केशर आधा ग्राम, गोलागिरी ५० ग्राम, चन्दन घूप १० ग्राम, लौंग ५ ग्राम, बादाम ३० ग्राम, ~~कवले गट्ठे ३० ग्राम~~, चिरोंजी २० ग्राम ।

हवन सामग्री :— बादाम गिरी १० ग्राम, पिस्ता १० ग्राम, छुहारे ३० ग्राम, खोपरा १०० ग्राम, इलायची ५ ग्राम, चारोली २० ग्राम, (इन सबको कूटकर चूर्ण बना लेना चाहिए) दशांग धूप १५० ग्राम, बूरा देशी १०० ग्राम ।

समिध :— लाल चन्दन ५० ग्राम, सफेद चन्दन ५० ग्राम, देवदारु १०० ग्राम (पीपल, बबूल आदि की समिध ३ किलो ।)

अन्य सामग्री :— रोली ५० ग्राम, मोली २० ग्राम, लाल गुलाल ५० ग्राम, हल्दी पिसी हुई ५० ग्राम, लकड़ी की खूंटियां ४, चाटू १, दीपक ५, रुई (बत्ती के लिये), माचिस १ पेटी, पान नागरबेल ७, कुम्भ कलश २, लाल कपड़ा एक मीटर, नारियल ४, कलदार रु. २, चवन्नी २, गजरे २, फल मालाएँ ५, खुल्ले फूल १०० ग्राम, मेंहदी पिसी हुई २० ग्राम, सावुत सुपारी १०, हल्दी की गांठें ५, अगरबत्ती १ पैकेट, घी देशी ५०० ग्राम, कपूर १०० ग्राम ।

नवगृह प्रवेश हेतु आवश्यक सामग्री :— उपरोक्त सभी सामग्री के साथ-साथ निम्न सामग्री और चाहिए - कुम्भ कलश २, गोटा २ मीटर, कैंची १, लालटेन (चौमुखी) १, इण्डी १, दुपट्टा १, गुड़ सवा किलो, फल सवा किलो, लोहे की कीलें (नागफनी) ४, छानने की रेजी १ मीटर ।

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री :— उक्त मन्दिर के सामान एवं पूजन सामग्री के साथ-साथ निम्न सामग्री और ली जावे । कुम्भ कलश १, नारियल ४, लाल कपड़ा १ मीटर, रोली ५० ग्राम, मोली २० ग्राम, गुड़ सवा किलो, दुपट्टा १, कलदार रुपये २, चवन्नी २, दीपक ५, रुई, माचिस, घी (दीपक जलाने के लिये), गजरे २, फूलमाला २, मातृका यन्त्र १, तांबे का कलश मयढक्कन १, नवरत्न की पुड़िया १, प्रचलित सिक्के, सोने चांदी की फांस (सर्प सर्पिणी-कच्छप) चौकोर पत्थर ६, पान ५, सुपारी ५, हल्दी की गांठ ५, कपूर ५ ग्राम ।

दुकान अथवा कारखाने का मुहूर्त हेतु :— मन्दिर से चौकी २, पाटे २, सिंहासन १, छत्र १ तथा पूजन योग्य बर्तन ।

पूजन सामग्री :— चांवल ५०० ग्राम, केशर आधा ग्राम, गोला गिरी ५० ग्राम, धूप १० ग्राम, कपूर १० ग्राम, लौंग १० ग्राम, बादाम ३० ग्राम, चारोली २० ग्राम ।

अन्य सामग्री :— कुम्भ कलश १, नारियल २, लाल कपड़ा १ मीटर, कलदार रुपये २, चवन्नी २, रोली ५० ग्राम, मोली २० ग्राम, दीपक १, रुई, माचिस, दीपक जलाने वास्ते घी, गजरे २, फूलमाला ५, पान १०, सुपारी ५, हल्दी की गांठ ५, फल ५ । आवश्यक बहीखाते व दवात कलम आदि ।

नामकरण संस्कार :— उपरोक्त दुकान अथवा कारखाने के मुहूर्त में लिखी सभी सामग्री (बही खातों के अतिरिक्त) तथा हवन सामग्री उपरोक्त अनुसार । इति ।

*****

Scanned by CamScanner

मुद्रक — श्री वीर प्रेस, मनिहारों का रास्ता, जयपुर - 3

Scanned by CamScanner

हमारे प्रमुख प्रकाशन

सिद्धचक्र मण्डल विधान	50.00	नवग्रह विधान.	5.00
नित्यपूजा पाठ संग्रह	60.00	चि.पार्श्व.व त्रिलोक समु. पूजा	2.00
नित्यपूजा (दैनिक पर्व) सजिल्द	40.00	रविव्रत कथा व मंडल पूजा	6.00
स्तोत्र पाठ संग्रह सजिल्द	35.00	रोटतीज पूजा व कथा	3.00
दर्शन सामायिक पूजा पाठ संग्रह	10.00	तीर्थ क्षेत्र पूजा संग्रह	30.00
चौसठ ऋद्धि पूजा सजिल्द	15.00	जैन संस्कार विधि	10.00
सोलहकारण विधान सजिल्द	16.00	जैनदर्शनसार संस्कृत हिन्दी	
वर्तमानचतुर्विंशतिपूजा (वृन्दा.)	25.00	सहित (एम.ए. कोर्स में)	50.00
श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा	20.00	व्रत कथा संग्रह	12.00
दशधर्म भावना-(सदासुखजी)	8.00	निशिभोजनत्याग वर्णन	1.00
षोडशकारण भावना (सदासुखजी)	13.00	स्वानुभाव दर्पण	3.00
दशलक्षण मण्डल विधान	15.00	दर्शन सामायिक पाठ	4.00
अनन्त व्रत कथा पूजा	2.00	भक्तामर तत्त्वार्थ सूत्र	5.00
लब्धि विधान व्रत पूजा	8.00	णमोकार महामंत्र व भक्तामरपूजा	4.00
सुगन्धदशमी कथा व पूजा	5.00	भक्तामर स्तोत्र जेबी साइज	2.00
रविव्रत कथा व पूजा	4.00	भक्तामर स्तोत्र भाषा (हेमराज)	2.00
अष्टाह्निका व्रत कथा व पूजा	4.00	भक्तामर स्तोत्र संस्कृत (हिन्दी पद्य.	
कांजिकाव्रतोद्यापन पूजा कथा	4.00	अन्वयार्थ एवं भावार्थ सहित	5.00
अठारह नाता सीता बनवास	2.00	कल्याण मंदिर (भाषा)	1.00
कर्मनिर्झरव्रत पूजा (झरका तेला)	4.00	इष्टछतीसी	2.00
चन्दनषष्ठी व्रत कथा पूजा	4.00	जयपुर जैन मंदिर विवरण	4.00
सौभाग्य दशमी व्रत कथा पूजा	3.00	मेरी भावना	0.50
रत्नत्रय विधान	10.00	सप्त चालीसा संग्रह	3.00
श्रीसिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर पूजा विधान	3.00	चन्द्रप्रभ चालीसा	1.00
तीन चौबीसी पूजा कथा (रोटतीज)	6.00	घोड़ी, [illegible] व अठाइयाँ	3.00
छहढाला मूल	3.00	[illegible] एवं	
तत्त्वार्थ सूत्र (अर्थ सहित)	10.00	याग मण्डल विधान	20.00
नन्दू सप्तमी (निर्दुक्ख सप्तमी)	3.00	पंचमेरू नन्दीश्वर विधान	10.00
पंच परमेष्ठी मण्डल विधान	6.00	ऋषिमण्डल यंत्र-पूजा	4.00
नित्य व शांति विधान मण्डल पूजा	13.00	आरती संग्रह	3.00

अन्य-हमारे यहां बनारस, सूरत, कोलकाता, जबलपुर, किशनगढ़, देहली, श्रीमहावीरजी, बम्बई आदि सभी स्थानों के ग्रन्थ मिलते है।

वीर पुस्तक भण्डार, मनिहारों का रास्ता, जयपुर-3
फोन : ऑफिस : 2313525, नि. : 26[illegible]

Scanned by CamScanner